आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/UD/29-150/2017-2019

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जन संवाद का पाक्षिक

वर्ष 3 | अंक 24 | उदयपुर मंगलवार 01 जनवरी 2019 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

उदयपुर में मीरांमय महादेवी वर्मा

20 से 22 अक्टूबर 1975 के त्रि-दिवसीय आयोजन में महादेवीजी के मीरां संबंधी व्याख्यानों से शोध-खोज की प्रेरणा पाकर मैंने 'निर्भय मीरां' पुस्तक लिखी। यहां प्रस्तुत है उनके व्याख्यानों के प्रमुख महत्वपूर्ण अंश।

-डॉ. महेन्द्र भानावत-

मेरे लिए राजस्थान तीर्थ है। राजस्थान के प्रत्येक कण में वीरों का रक्त बसा है। यहां का हर कण विद्रोह की ज्वाला से मूंगों की तरह दैदीप्यमान है। यहां की धरती मूल्यवान है। राजस्थान की यशस्वी शौर्य और बलिदान की धरती पर स्वर्ग की मन्दाकिनी की तरह मीरां की काव्यधारा बही है।

मीरां मध्ययुग की नारी है। मध्ययुग में अंधकार और आलोक दोनों का मिश्रण रहा है। यह संघर्षकालीन युग रहा है। उस समय नारी के पास मुख ही नहीं था। उसको कहने, सुनाने तथा वाक् अभिव्यक्ति के लिए कोई आजादी नहीं थी। मध्ययुग की नारी 'अनबोली' महिला थी जिसका कोई चित्र ही नहीं बन सकता। मैं भी मीरां का कोई चित्र नहीं बना पाई। अनबोले ही नारी उस युग में चरम बलिदान देती थी। मीरां अंधकारपूर्ण मध्ययुग में उत्पन्न हुई। कठोर पाषाणों की प्राचीरों के बीच उसके सुख के सभी साधन जुटाये गए थे।

सम्पूर्ण राजसी सुख वैभव के साथ मीरां को राणाशाही प्राचीरों ने घेर रखा था किन्तु मीरां का जन्म भौतिक राजसी सुख सुविधा के भोग हेतु निर्मित नहीं था। मीरां ने राजसी सुख की प्राचीरों के बीच रहकर अपने परम अध्यात्म 'गिरधर गोपाल' का हाथ पकड़ा और सभी राजसी सुख, सुविधायें तथा तत्कालीन मर्यादाओं को छोड़ दीं। पाषाणी दीवारें गल गई। राजकीय प्रतिबन्ध मर्यादा टूट गई। जहां-जहां इस परम विद्रोहिनी भक्तश्रेष्ठ मीरां के चरण पड़े वहां-वहां भक्ति के पवित्र प्रसून खिल गये।

मेरे प्रारंभिक युग में लड़कियों के लिए रामायण वाचन से अधिक पढ़ना भी दोषपूर्ण माना जाता था किन्तु मैंने ही संघर्ष कर अपना अध्ययन जारी रखा। वेदकाल की नारी बहुत शक्ति सम्पन्न रही है। जिस प्रकार मंत्रदृष्टा ऋषि हुए हैं उसी प्रकार ऋषिकाएं भी मंत्रदृष्टी रही हैं।

स्त्रियां ब्रह्मवादिनी भी रही हैं। प्रसिद्ध वैदिक ऋचा 'असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय, मृत्योर्मा अमृतं गमय' एक स्त्री की रचना है, पुरुष की नहीं। जब स्वामी विवेकानन्द शिकागो गये थे, उस समय वहां अनेक देशों एवं धर्मों की प्रार्थनाओं का वाचन हुआ तो सब प्रार्थनाओं में भारतीय नारी द्वारा रचित इस प्रार्थना को सर्वश्रेष्ठ माना गया।

सन् 1930 में सुभद्राकुमारीजी चौहान की अध्यक्षता में हमने मीरां जयन्ती मनाई थी और आज इतने वर्षों के बाद मुझको मीरां जयंती में सम्मिलित होने का हार्दिक आनन्द हो रहा है। मैंने गुजरात, कर्नाटक, बंगाल तथा समूचे दक्षिण तथा उत्तर भारत का भ्रमण किया है। देश के पूर्व पश्चिम में, उत्तर-दक्षिण में सर्वत्र मैंने मीरां के पद सुने हैं। मीरां के पदों की उड़ान समूचे भारतीय आकाश में व्याप्त है, मानो कोई मुक्त पक्षी असीम आसमान में उड़ रहा है।

मीरां सनातन भारतीय नारी की कथा है। उसका प्रत्येक चरण संघर्ष की एक कहानी है। मेरे व्यक्तित्व निर्माण में मीरां का बड़ा यशस्वी प्रभाव रहा है अतएव मैं अपने को मीरां की उपासिका मानती हूं। मेरे बचपन के समय मेरी माता मीरां के पद गाया करती थी। मीरां का एक प्रसिद्ध पद है- 'सुनि मैं हरि की आवाज।' मेरी मां इस पद को बार-बार गुनगुनाती थी।

एकबार मैंने अपनी मां से पूछा कि आवाज को क्या तुम सुनती हो, क्या मां? तब मेरी मां ने कहा, हां, उन्हें यह आवाज सुनाई देती है परन्तु इसको सुनने के लिए बहुत शान्त और एकाग्र चित्त लगाना पड़ता है। यह सुनकर मैं आंख बन्द कर बैठ गई।

कभी-कभी घण्टों पूजाघर में आंख बन्द कर बैठी रही फिर भी मुझे तो कोई आवाज सुनाई नहीं दी और तब मैंने

अपनी मां से शिकायत की कि मुझे तो कोई आवाज ही सुनाई नहीं देती। मेरी मां ने तब कहा था कि किसी दिन आगे चलकर यह आवाज सुनाई देगी और सचमुच मेरी मां का यह आशीर्वाद सही निकला और यह आवाज सुनाई देती है, जब मन पूर्णत: शान्त एवं एकाग्र रहता है।

मुझे भी पढ़ने-लिखने के लिए संघर्ष करना पड़ा। बीसवीं सदी के मध्यकाल तक नारी के स्वतंत्र अध्ययन के लिए इस देश में रूकावट थी। जब मैंने वेदाध्ययन के लिए निश्चय अभिव्यक्त किया तो कई पण्डित बौखला उठे। एक पण्डित तो मूर्छित हो गए कि अब क्या होगा। जब मैंने बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय आकर विद्याध्ययन के लिए प्रवेश लिया तो कतिपय पण्डित-समाज ने मुझे अपनी छात्रा स्वीकार करने में भी संकोच किया। फिर भी मैं अपने निश्चय पर डटी रही और मैंने अपना उच्च अध्ययन जारी रखा।

हम शून्य से उत्पन्न नहीं हो सकते। हम उत्पन्न होते हैं आकृतियों के बीच और यह रंगीन आकृतियां भी स्थायी नहीं हैं। सभी आकृतियां बनती बिगड़ती रहती हैं। वृक्ष की डाल पर जब पुराना पत्ता गिर जाता है तो वहीं दूसरा नया पत्ता आकर उस स्थान को ढक लेता है। पतझड़ में पुराने पत्ते झड़ जाते हैं और बसंत ऋतु में उसी वृक्ष पर नव-पल्लव छा जाते हैं। पतझड़ और बसंत का यह क्रम सनातक काल से चला आ रहा है। मानव ही इस विचित्र स्थिति को देखता, समझता है और इसकी व्याख्या करता है।

भक्ति आंदोलन के प्रसंग में मीरां तो साक्षात् राधा है। अष्ठ छाप के कवि तो अपनेआप को श्रीकृष्ण का सखा कहते हैं। सूरदास ने गोपियों, यशोदा, उद्धवजी के माध्यम से अपना श्रीकृष्ण के प्रति आंतरिक प्रेम प्रकट किया है किंतु मीरां ने तो दिल खोल कर अपने 'गिरधर गोपाल' को अपना वास्तविक पति मानने की डूंडी पीट दी है। सूरदास के भ्रमर गीत में गोपियों के तीव्र विरह का मर्मस्पर्शी वर्णन है किंतु मीरां के प्रत्येक गीत में उसके गिरधर गोपाल के प्रति तीव्रतम उत्कंठा, आतुरता, भाव विव्हलता का परिचय मिलेगा। मीरां का कृष्ण के प्रति जो प्रेम है, वह पति-पत्नी के प्रेम से भी अधिक गहरा है। प्रियतम-प्रेयसी के प्रेम से भी अधिक गहरा तथा अधिक व्यापक है।

प्रेम इतना व्यापक रहता है कि उसमें सभी भाव समाये जा सकते हैं। बुद्ध की महाकरुणा और महामैत्री के भाव के दर्शन मुझे मीरां के काव्य में होती है। मीरां के पदों में किसी के प्रति कोई शिकवा-शिकायत ही नहीं है। द्वेष के संबंध में वह कहती ही नहीं है, वो कह ही नहीं सकती थी क्योंकि मध्ययुग की नारी का मुख ही नहीं था। उस युग की नारी तो शिकायत को मुख से बाहर आने ही नहीं देती थी और अनबोले ही दृढ़तापूर्वक सभी विपदाओं एवं विपत्तियों के खिलाफ संघर्ष में रत थी।

मीरां के पद आत्म तादात्मक हैं और मुझको लगता है कि चूंकि लिखित नहीं थे इसलिये मीरां के पदों का फैलाव मीरां-भक्तों के एक कण्ठ से हजारों कण्ठों तक हो गया है इसलिए मीरां के पदों के साथ कुछ अन्य पद भी जनता में चल पड़े हों। ऐसा भी हो सकता है कि पदों में और कुछ मिला दिया गया हो, लेकिन किसी का साहस नहीं हुआ कि वह इन पदों के माध्यम से किसी के किये दुर्वचन कहला दे। मीरां तो साक्षात् साकार प्रेममयी है। वह साकार प्रेम की लपट है। ज्योति है जिसमें कालिमा, कटुवचन, बुराई की कोई गुंजाइश ही कैसे रह सकती है। वह बिल्कुल ज्योतिर्मयी है।

मीरां के जीवन के इतिहास के लिए खोज होनी चाहिये। उसके जीवन के संबंध में अभी तक हम पता नहीं लगा सके हैं। मीरां ने हलाहल को स्वीकार किया, निर्वासन को भोगा, उसने मृत्यु कहां पाई? यह इतिहास से सिद्ध नहीं है। केवल इतना प्रामाणिक है कि उसको विषम संघर्षों के बीच गुजरना पड़ा। उसने सहज विषपान किया तब भी वह अपने आराध्य में तन्मय रही। ऐसी कोई समर्थ, वीरांगना, विद्रोहिनी नारी बौद्धिक साहित्य से अब तक मुझे नहीं मिली।

भारतवर्ष में नारी को सहधर्मिणी कहा गया है। इनमें से कुछ ब्रह्मवादिनी रही हैं। कुछ अध्ययन-अध्यापन में रत रहती थीं। कुछ कुंवारी रहती थीं। कुछ विवाह करती थीं। कुछ गृहस्थी रहती थीं और कुछ संन्यासिनी भी रहती थीं। प्राचीनकाल में कुछ राजकन्याओं द्वारा ऋषियों से विवाह करने का जिक्र भी मिलता है किंतु समाज तथा उस युग की परम्पराओं से संघर्ष करने वाली नारी के मुझे केवल मीरां में ही दर्शन होते हैं।

-शेष पृष्ठ सात पर

मैंने गुजरात, कर्नाटक, बंगाल तथा समूचे दक्षिण तथा उत्तर भारत का भ्रमण किया है। देश के पूर्व पश्चिम में, उत्तर-दक्षिण में सर्वत्र मैंने मीरां के पद सुने हैं। मीरां के पदों की उड़ान समूचे भारतीय आकाश में व्याप्त है, मानो कोई मुक्त पक्षी असीम आसमान में उड़ रहा है।

मीरां के पद आत्म तादात्मक हैं और मुझको लगता है कि चूंकि लिखित नहीं थे इसलिये मीरां के पदों का फैलाव मीरां-भक्तों के एक कण्ठ से हजारों कण्ठों तक हो गया है इसलिए मीरां के पदों के साथ कुछ अन्य पद भी जनता में चल पड़े हों। ऐसा भी हो सकता है कि पदों में और कुछ मिला दिया गया हो, लेकिन किसी का साहस नहीं हुआ कि वह इन पदों के माध्यम से किसी के किये दुर्वचन कहला दे। मीरां तो साक्षात् साकार प्रेममयी है। वह साकार प्रेम की लपट है। ज्योति है जिसमें कालिमा, कटुवचन, बुराई की कोई गुंजाइश ही कैसे रह सकती है। वह बिल्कुल ज्योतिर्मयी है।

मीरां के जीवन के इतिहास के लिए खोज होनी चाहिये। उसके जीवन के संबंध में अभी तक हम पता नहीं लगा सके हैं। मीरां ने हलाहल को स्वीकार किया, निर्वासन को भोगा, उसने मृत्यु कहां पाई? यह इतिहास से सिद्ध नहीं है। मीरां को समझने के लिए तथा मीरां के सम्बन्ध में तथ्य संग्रह के लिए जब तक कोई जीवन खपा नहीं दे, तब तक मीरां को पाया जाना कठिन है। आप लोगों में से किसी को यह महत् कार्य करना चाहिये।

मेनार तालाब पर राजहंसों का डेरा

उदयपुर जिले में बर्डविलेज के नाम से ख्यात मेनार के तालाब में इन दिनों हजारों की संख्या में बार हेडेड गूज डेरा डाले हुए है। सफेद रंग के बहुत ही सुंदर पक्षी बार हेडेड गूज को राजहंस, सवन अथवा बिरवा के नाम से जाना जाता है। इसके सिर पर काले रंग की धारियां (बार) होती है इसलिए इसे बार हेडेड गूज कहा जाता है। पक्षी विशेषज्ञ विनय दवे ने बताया कि यह प्रवासी पक्षी है और मेवाड़ अंचल के जलाशयों में हिमालय पार, लद्दाख एवं तिब्बत से शीतकाल बिताने के लिए आता है। बार हेडेड गूज दुनिया में सर्वाधिक ऊंचाई पर उड़ने वाले पक्षियों में से एक है। इसकी गर्दन और चाल बेहद आकर्षक होती है और यह पक्षी समूह में वी आकृति में उड़ान भरते हैं। सबसे आश्चर्यजनक तथ्य यह भी है कि यह पक्षी एक बार में लगातार आठ घंटे बिना रुके उड़ सकते हैं।

फोटो - कमलेश शर्मा

पोथीखाना

जैन दर्शन और इतिहास की उल्लेखनीय कृति

जैन धर्म एक स्वतंत्र एवं सर्वतंत्र धर्म है। इसका अपना गौरवशाली इतिहास है। धार्मिक इतिहास के साथ ही दर्शन और सिद्धान्तों के इतिहास का भी महत्व होता है। दर्शन, तत्वज्ञान और सिद्धान्त किसी भी धर्म, संस्कृति या परम्परा के मूलाधार होते हैं। किसी भी परम्परा के सिद्धान्त ही उसके आचार को बचाते हैं। जैन धर्म का तत्वज्ञान और इसके सिद्धान्त विशिष्ट और वैज्ञानिक हैं। जीव, अजीव, मोक्ष, कर्मवाद, अनेकान्त, विशिष्ट आचार पद्धति आदि के आधार से यह स्पष्ट होता है कि जैन धर्म और दर्शन नितान्त मौलिक है और प्राचीनतम भी।

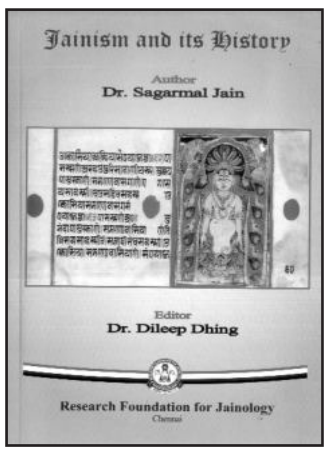

प्राचीनता के साथ अनेक कालखण्डों में एक परम्परा के सिद्धान्त और आचार दूसरी परम्परा के सिद्धान्त और आचार से प्रभावित होते हैं। जैन दर्शन की आचार प्रणाली में कुछ बाह्य परिवर्तन आए। जैन धर्म की विभिन्न सम्प्रदायों में भी आचार सम्बन्धी बाहरी भिन्नताएँ देखने को मिलती हैं। ऐसी स्थिति में भी असंख्य काल के सुदीर्घ प्रवाह में जैन सिद्धान्त और आचार की मौलिकता कायम रही। तंत्रयुग से जैन समाज प्रभावित हुआ, परन्तु इस समाज ने किसी भी प्रकार की हिंसा और नकारात्मक तरीके को कभी प्रश्रय नहीं दिया। इतिहास पढ़ते हुए जैन धर्म की ऐसी अनेक विशिष्टताओं का दिग्दर्शन सहज ही हो जाता है।

जैन धर्म का विपुल साहित्य है। मूल प्राचीन साहित्य प्राकृत भाषा में है। लम्बे काल तक आगम साहित्य मुख्यत: श्रुति और स्मृति के सहारे आगे बढ़ता रहा। इतिहास गवाह है कि समय के सुदीर्घ प्रवाह में अनमोल श्रुत सम्पदा का भारी नुकसान हुआ। इस नुकसान में आगम साहित्य की अनेक कड़ियाँ टूटी होंगी और अस्त-व्यस्त हुई होंगी। मनीषियों ने स्मृति, श्रुति और उपलब्ध साहित्य के आधार पर जैन सिद्धान्त और तत्वज्ञान से सम्बन्धित जानकारियों को सहेजा और सुरक्षित किया। यह कार्य अलग-अलग विद्वान अलग-अलग स्थानों पर करते हैं। विद्वानों की विद्वत्ता और अनुभव भी अलग-अगल होते हैं। इसलिए सिद्धान्तों में आंतरिक एकता होने के बावजूद व्याख्या में मामूली अन्तर भी आ जाता है।

जैन धर्म-दर्शन के उद्भट वरिष्ठ विद्वान प्रो. सागरमल जैन द्वारा लिखित और जैनविद्या मनीषी साहित्यकार डॉ. दिलीप धींग द्वारा संपादित पुस्तक 'जैनिज्म एंड इट्स हिस्ट्री' में धर्म और दर्शन की ऐतिहासिक विकास-यात्रा को प्रामाणिक तरीके से प्रस्तुत किया गया है। सिद्धान्तों के विकास के इतिहास में यह भी बताया जाता है कि कौनसा सिद्धान्त किस प्राचीन आगम ग्रंथ में किस रूप में मिलता है। बाद में व्याख्याकारों ने किस प्रकार उसका विवेचन किया और उसे व्यवस्थित रूप में हमारे समक्ष रखा।

पुस्तक के कुछ अध्यायों में इतिहास के साथ ही जैन सिद्धान्तों की व्यावहारिक उपयोगिता पर भी प्रकाश डाला गया है। रिसर्च फाउंडेशन फॉर जैनोलोजी (सुगन हाउस, 18, रामानुजा अय्यर स्ट्रीट, साहुकार पेट, चेन्नई) से प्रकाशित इस सवा तीन सौ पृष्ठीय पुस्तक में कुल दस अध्याय हैं। हर अध्याय महत्त्वपूर्ण जानकारी देता है तथा सृजन, चिन्तन व अनुसंधान की नई दिशाएँ खोलता है। विद्वानों, शोधार्थियों, विद्यार्थियों के साथ ही अंग्रेजी भाषी पाठकों लिए यह पुस्तक बेहद उपयोगी है।

- डॉ. कहानी भानावत

रामलीला के 500 वर्षों पर प्रकाशित अनुपम ग्रंथ

अयोध्या का अयोध्या शोध संस्थान अपने स्थापना काल 1986 से अवध लोक की सांस्कृतिक एवं कलापूर्ण धरोहर के उन्नयन, संरक्षण, सर्वेक्षण, अध्ययन, अन्वेषण, प्रकाशन एवं संवर्धन की दिशा में अति उल्लेखनीय कार्य कर रहा है। इसके साक्षी यहां से प्रकाशित मूल्यवान ग्रंथ हैं।

इसी कड़ी में डॉ. छेदीलाल कांस्यकार लिखित 'रामलीला के 500 वर्ष' नामक ग्रंथ बड़ा उपयोगी तथा विशद अध्ययन लिये है। इसमें लेखक ने गहन अध्ययन, शोधात्मक गुणवत्ता, आंखों देखी रामलीलाओं तथा जानकारों, विद्वानों एवं प्रदर्शनकत्ताओं से पूछताछ कर बड़ी प्रामाणिकता के साथ किया है। साथ ही कई भ्रांत धारणाओं का खण्डन कर असलियत जगजाहिर की है। लीलाजनित मंचनों के 48 ऐतिहासिक और विविधतापूर्ण चित्र दिये हैं। यही नहीं, विभिन्न रामलीला कमेटियों तथा समितियों के पेम्प्लेट, पोस्टर तथा आयोजन विषयक जानकारी के पत्रक देकर रामलीला की जन लोकप्रियता से भी सबको रू-ब-रू कराया है।

अपने आत्म निवेदन में लेखक ने रामलीला को एक-दूसरे से जोड़ने का उपक्रम बताते हुए कला को अनुष्ठान से, नर को नारायण से, श्रव्य को दृश्य से, लोक को शास्त्र से, वर्तमान को अतीत से तथा नई पीढ़ी को पुरानी पीढ़ी से जोड़ने का महोत्सव कहा है।

अयोध्या संस्थान के निदेशक डॉ. योगेन्द्रप्रताप सिंह ने अपनी बात में स्पष्ट किया है कि लेखक डॉ. कांस्यकार ने अपने अध्ययन, चिन्तन और पर्यवेक्षण के आधार पर अयोध्या, फैजाबाद, वाराणसी और रामनगर की लीलाओं का यथातथ्य विवरण प्रस्तुत कर लीलाओं को वर्तमान सन्दर्भों से जोड़ने का प्रयास किया है। रामलीला से जुड़े प्रवादों और भ्रांतियों के तर्कसंगत निवारण की चेष्टा की है।

कुंवरजी अग्रवाल का कथन भी सही जान पड़ता है। उन्होंने लिखा कि भारतीय संस्कृति का आरंभिक बिन्दु अरण्य और कृषि-संस्कृति के द्वन्द्वों के मध्य गुजरा है जिसकी छाप आज भी हमारे बहुत सारे धार्मिक अनुष्ठानों में दिखाई पड़ती है। रामलीला के माध्यम से भारतीय संस्कृति के उन आदि-बिन्दुओं को जनता के लिए भी सुलभ होने का अवसर मिलता है जो बड़े-बड़े विद्वानों को मोटी-मोटी पोथियों में भी सुलभ नहीं है।

यों रामलीलाओं का प्रचलन भारत के विभिन्न अंचलों से लेकर विदेशों में भी कई जगह है। वर्षों पूर्व हम लोगों ने भी विश्व प्रसिद्ध लोककला संस्थान भारतीय लोककला मण्डल में कठपुतलियों के माध्यम से रामलीला नाटिका की रचना की थी जिसके अनेक प्रदर्शन देश के विभिन्न अंचलों में हुए। रामायण के अलावा वसीला, हड़ताल और अन्य नाटिकाएं भी बड़ी सराही गईं।

सन् 1965 में रूमानिया में आयोजित तृतीय अन्तर्राष्ट्रीय कठपुतली समारोह में कला मण्डल के ही दल ने भारत की ओर से प्रतिनिधित्व कर 'मुगल दरबार' नामक कठपुतली नाटिका मंचित की थी जिसने सर्वोत्कृष्ट प्रदर्शन कर प्रथम पुरस्कार अर्जित किया था।

यही नहीं, राजस्थान के विभिन्न अंचलों में रामलीलाओं के विभिन्न रूप प्रचलन में हैं। मेवाड़ की ओर तो रासधारी नाम से जो ख्याल प्रसिद्ध रहे वे रासलीला से सम्बन्धित नहीं होकर रामलीला से सम्बन्धित थे जिनमें राम जीवन की विविध लीलाओं का लोकदर्शन अभिव्यक्त हुआ मिलता है। जो भी हो, बड़ी साइज की, पक्की जिल्द में सज्जित लगभग तीन सौ पृष्ठ की यह पुस्तक अयोध्या शोध संस्थान, तुलसी स्मारक भवन, अयोध्या, फैजाबाद का मानक ग्रंथ है जिसका मूल्य मात्र 251 रूपया है।

- म.भा.

वीतराग स्तोत्र

कालिदास सर्वज्ञ श्री हेमचन्द्राचार्य ने 'वीतराग स्तोत्र' की रचना में अपने हृदय की परम भक्ति को पूर्ण भावों की तृप्ति के साथ प्रकट करने का पुरुषार्थ किया है। इस स्तोत्र में जैसे शब्द नहीं बोलते, बल्कि उनका हृदय बोलता है। परमात्मा के पूर्ण स्वरूप को समझना हो तो वीतराग स्तोत्र का पारायण अनिवार्य है। इस स्तोत्र का स्वाध्याय अपनी आत्मा में छिपे परमात्म तत्व का साक्षात्कार कराता है।

वीतराग की साधना में जो सौन्दर्य, ऐश्वर्य एवं गांभीर्य अभिव्यक्त होता है, वह लौकिक साधनों की विपुलता एवं विराटता में दृष्टिगत नहीं होता।

मुनि मनितप्रभ ने साहित्य सर्जक के रूप में प्रस्तुत रचना का विवरण एवं भावार्थ लिखकर अपने भक्तिनिष्ठ भक्त हृदय को प्रकट किया है। उनके लेखन-विवेचन-चिन्तन में जितनी मौलिकता एवं सृजन-शीलता टपकती है, उतनी ही पवित्रता और शालीनता भी व्यक्त होती है। यह भक्तिभाव से प्रभावित मधुर-सुन्दर विवरण मोक्ष-वर के वरण का प्रेरक माध्यम बने, यही मात्र एक काम्य है।

जीवन और मृत्यु

- डॉ. जयप्रकाश सेठिया -

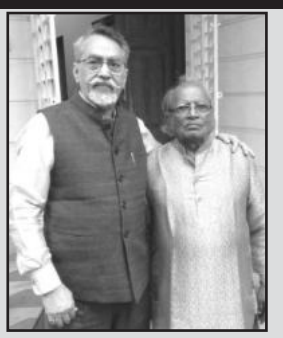

1.
जीवन खिलता रिश्तों से।
मृत्यु मिलती फरिश्तों से।।
2.
जीवन उत्सव।
मृत्यु महोत्सव।।
3.
जीवन के रंग भिन्न-भिन्न।
मृत्यु रंगहीन।।
4.
जीवन के साथ शांति अशांति।
मृत्यु परमशांति।।
5.
जीवन का होता है अंत।
मृत्यु की यात्रा अनंत।।
6.
जीवन पुष्प का खिलना।
मृत्यु उसका झड़ना।।
7.
जीवन संग्राम।
मृत्यु विराम।।
8.
जीवन सतत चिंतन।
मृत्यु महा मौत।।
9.
जीवन परीक्षा।
मृत्यु परिणाम।।
10.
जीवन सर्जन।
मृत्यु विसर्जन।।
11.
जीवन बंधन की युक्ति।
मृत्यु बंधन से मुक्ति।।
12.
जीवन प्रकृति का कर्म।
मृत्यु प्रकृति का धर्म।।
13.
जीवन लौकिक।
मृत्यु पारलौकिक।।
14.
जीवन सदृश्य।
मृत्यु अदृश्य।।
15.
जीवन आकार।
मृत्यु निराकार।।

डॉ. भानावत एवं जादव को कोमल कोठारी लोककला पुरस्कार

उदयपुर। लोककला के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिये कोमल कोठारी स्मृति लोककला पुरस्कार इस साल उदयपुर के लोककलाविद डॉ. महेन्द्र भानावत एवं अहमदाबाद के जोरावरसिंह दानुभाई जादव को संयुक्त रूप से प्रदान किया गया।

यह पुरस्कार 21 दिसंबर को शिल्पग्राम उत्सव के उद्घाटन अवसर पर मुख्य अतिथि सुखाड़िया विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. जे. पी. शर्मा, कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. उमाशंकर शर्मा एवं जिला एवं सत्र न्यायाधीश रवीन्द्र माहेश्वरी द्वारा प्रदान किया गया। सम्मान स्वरूप डॉ. भानावत को 1 लाख 25 हजार पांच सौ की राशि, शॉल तथा रजत पट्टिका से नवाजा गया। पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र के निदेशक फुरकान खान ने कहा कि गत वर्ष यह पुरस्कार प्रारंभ किया गया था। लोककला के क्षेत्र में लाइफ टाइम अचीवमेंट के लिए यह पुरस्कार उन समर्पित एवं साधकों को प्रदान किया जाता है जो निष्प्रिय भाव से इस क्षेत्र में जुटे हुए हैं।

प्रो. जे. पी. शर्मा ने कहा कि जो पूरा भारत भ्रमण नहीं कर सकते वे यहां के उत्सव में मिनी भारत के दर्शन कर सकते हैं। रवीन्द्र माहेश्वरी ने कहा कि कला और संस्कृति के प्रति जो लगाव है वह इस उत्सव में देखने को मिलता है। प्रो. उमाशंकर शर्मा ने कहा कि गायन वादन और नर्तन के क्षेत्र में पूरे देश में जो रंगीनियां देखने को मिलती हैं उनका प्रत्यक्ष दर्शन इस उत्सव के माध्यम से सामाजिकों को हो सकेगा। इस अवसर पर पश्चिम क्षेत्र के अतिरिक्त निदेशक सुधांशु सिंह ने सम्मानित कला-मर्मज्ञों का परिचय दिया।

कोमल वाधवानी 'प्रेरणा' सम्मानित

उज्जैन। विगत दिनों ब्रह्मलीन महर्षि श्रीश्री मौनी बाबा की109वीं जयंती पर श्री मौनतीर्थ पीठ दशाश्वमेध (गंगा) घाट पर सात दिवसीय श्रद्धा पर्व सम्पन्न हुआ। नगर की वरिष्ठ साहित्यकार कोमल वाधवानी 'प्रेरणा' को श्री मौनतीर्थ पीठाधीश्वर संतश्री डॉ. सुमनभाई मानस भूषण ने अंगवस्त्र, अभिनंदन पत्र, स्मृति चिन्ह एवं 5100 रूपये की राशि प्रदान कर 'मानसश्री सम्मान' से सम्मानित किया।

डॉ. शकुन्तला पंवार सम्मानित

डॉ. शकुन्तला पंवार हाल ही में छत्तीसगढ़ के जांजगीर के न्यू एकेडेमी

पब्लिक स्कूल तथा सरायपाली के अखिल भारतीय मारवाड़ी महिला मंच द्वारा आयोजित लोकनृत्य प्रशिक्षण शिविर में 750 बालिकाओं तथा महिलाओं को प्रशिक्षित कर लौटी हैं। अपने महीने भर के प्रवास में उन्होंने राजस्थान, गुजरात तथा ब्रज में प्रचलित घूमर, कालबेलिया, चेरी, ढोलकड़ी, हरियो रूमाल, खंजरी, इंजिन की सीटी, तेराताली, भवाई तथा रासलीला नामक लोकनृत्यों का रसरंग प्रशिक्षण दिया। समारोह में डॉ. शकुन्तला पंवार तथा गोवर्धन पंवार का अभिनंदन करते विधानसभा के पूर्व उपाध्यक्ष नारायण चंदेल, जिला महिला संगठन की अध्यक्षा हेमलता बंसल। साथ में उदयपुर की नन्ही भवाई नर्तिका हीर सिसोदिया।

निरामया कार्यक्रम सफलतापूर्वक सम्पन्न

उदयपुर। स्वास्थ्य शिक्षा से सम्बंधित राज्य सरकार द्वारा संचालित निरामया कार्यक्रम का प्रथम चरण सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ जिसका उदयपुर संभाग में शुभारम्भ गत 26 सितंबर को पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (पीआईएमएस) उमरड़ा से हुआ था। कार्यक्रम के अंतर्गत मेडिकल स्टूडेंट्स व डॉक्टर द्वारा 26 सितंबर को वातावरण स्वच्छता, 24 अक्टूबर को मच्छर जनित बीमारियों की रोकथाम, 31 अक्टूबर को व्यक्तिगत स्वच्छता, 12 दिसंबर को किशोरावस्था - पोषक सम्बंधित तथा 19 दिसंबर को वृद्धावस्था स्वास्थ्य देखभाल सबंधित जानकारी भीण्डर व गिर्वा पंचायत समिति के 44 चयनित गावों में दी गयी। इसमें कुल 25 टीम बनाई गई। इसमें 1 टीम में 6 स्टूडेंट्स व 1 डॉक्टर ने सुबह 9 से शाम 4 बजे तक चयनित गावों में ये जानकारी दी जिसमें ग्रामीणों दिलचस्पी दिखाई और उत्साहपूर्वक भाग लिया। पीआईएमएस के चैयरमेन आशीष अग्रवाल, डीन डॉ. चंद्रा माथुर एवं डॉ. डी आर माथुर के निर्देशन में निरामया कार्यक्रम फेज-1 का सफलतापूर्वक समापन हुआ।

खोज-खबर

गुप्तजी को शोभित 'चलते-चलते'

राजस्थान में स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान जिन सेनानियों का सर्वाधिक महत्वपूर्ण योगदान रहा उनमें शोभालाल गुप्त को विस्मृत नहीं किया जा सकता। सन् 1958 में उदयपुर आने पर नई दिल्ली वाले दैनिक हिन्दुस्तान के व्यक्ति : साहित्य और समस्याएं स्तम्भ में मैंने डॉ. मोतीलाल मेनारिया, देवीलाल सामर, गोवर्धन बाबा, कविराव मोहनसिंह आदि पर लिखा जिससे मुझे प्रशंसामूलक कई पत्र मिले।

उन्हीं दिनों उदयपुर से दैनिक जय राजस्थान प्रारम्भ हुआ। सम्पादक चन्देशजी व्यास ने मुझे इसमें साप्ताहिक कॉलम लिखने को कहा तब हर रविवार को मैंने 'चलते-चलते' स्तम्भ में लिखना शुरू किया और कोई पच्चीस वर्ष तक लिखता रहा। यह कॉलम भी बहुत चर्चित रहा। पाठकों ने लगातार मुझे प्रोत्साहित किया।

शोभालाजी गुप्त से मेरा परिचय नहीं था। जय राजस्थान को पढ़कर उन्होंने मुझे समय-समय पर पोस्टकार्ड लिखे तब ज्ञात हुआ कि वे दैनिक हिन्दुस्तान के सम्पादक हैं। उनके सभी पत्र डी-37, गुलमोहर पार्क नई दिल्ली से लिखे हुए हैं। एक पत्र 29 अगस्त 1990 का इस प्रकार है-

प्रिय भानावतजी,

जय राजस्थान के 'चलते-चलते' स्तम्भ में आकोला के मोहनलालजी के जीवन और कृतित्व पर आपने प्रकाश डाला, उसके लिए मेरी हार्दिक बधाई स्वीकर करें। उनका साहित्य पढ़ने की इच्छा है। क्या वह, कहीं से उपलब्ध हो सकता है। मुझे खेद है कि मैं मूलत: उसी क्षेत्र का होते हुए भी उनसे सम्पर्क नहीं साध सका। आप व्यस्त समय से कुछ समय निकालकर उत्तर लिखेंगे तो आपका आभार मानूंगा। आपके चलते-चलते स्तम्भ का मैं नियमित पाठक हूं। आप बहुत अच्छा लिखते हैं।

आपका
शोभालाल गुप्त

इस तरह का एक पत्र 27 दिसम्बर 1990 का है जिसमें उन्होंने लिखा-

आपकी लेखनी का चमत्कार जय राजस्थान में देखने को मिल जाता है। मैं आपका फेन बन गया हूं। खूब लिखते हैं। आपको यह तो ज्ञात ही है कि गोपालप्रसादजी व्यास के प्रकटन से दिल्ली में एक विशाल हिन्दी भवन बन रहा है। भवन के सभागार में मीरां का चित्र लगाना है। आपको कष्ट न हो तो मीरां का असली चित्र बनवाकर या पहले से बना हो तो श्री व्यास को यथासंभव शीघ्र भिजवादें। इस चित्र के आधार पर बड़े-छोटे आकार का चित्र बम्बई में बनवा लिया जायेगा। सूर, तुलसी आदि के चित्र बम्बई से ही बनाये जा रहे हैं।

मेरा व्यासजी से घनिष्ट सम्बन्ध रहा। वे अपनी कविताओं से पूरे देश में पत्नीवाद के प्रवर्तक ही हो गये। उदयपुर में नोबल्स कॉलेज में आयोजित एक कवि सम्मेलन में भी उन्होंने 'पत्नी को परमेश्वर मानो' तथा 'सलवार चली, सलवार चली' कविताओं से श्रोतावर्ग को रस मग्न कर दिया। मैंने यहीं उनसे एक लम्बा इन्टरव्यू भी लिया जो कई जगह छपता रहा। व्यासजी ने भी उसका अपने पत्रों में कई बार जिक्र किया।

एक अन्य 14 सितम्बर 1991 के पत्र में गुप्तजी ने मुझे लिखा- 8 सितम्बर के जय राजस्थान में आपका लेख काष्ठशिल्पी मांगीलाल मिस्त्री पढ़कर आनन्द हुआ। आपको बहुत-बहुत बधाई। आपका चलते-चलते स्तम्भ पढ़ने योग्य होता है। जिन लोगों पर आप लेखनी चलाते हैं उन्हें मूर्तिवन्त कर देते हैं। मैंने अपने जीवन के 87 वर्ष पूरे कर लिये। आपकी शुभकामनाओं का सम्बल चाहिये।

मेरे पुत्र मुक्तक के निधन पर उनका बड़ा ही हृदयद्रावक पत्र मुझे आज भी अश्रु विगलित कर हिम्मत बंधाता है। नवजीवन में दुखद समाचार पढ़ उन्होंने लिखा- यह दुखद समाचार पढ़ चित्त को बड़ा आघात लगा। पच्चीस वर्ष की जवानी की आयु में श्री मुक्तक के निधन से आपको, आपके परिजनों और इष्ट मित्रों को निश्चय ही बड़ा आघात पहुंचा होगा। मैंने भी पीड़ा महसूस की है। मैं एक से आठ अप्रेल तक जयपुर में था किन्तु मालूम न हुआ कि उनका जयपुर के अस्पताल में इलाज हो रहा है। पता होता तो उनको देखने अवश्य आता। आप तो दार्शनिक हैं। इस दुर्घटना को उसी दृष्टि से लेंगे।

गुप्तजी का उदयपुर कभी-कभी आना होता। वे जब भी आते, नवजीवन के सम्पादक कनक 'मधुकर' के निवास पर रहते। एक दिन कनकजी ने मुझे फोन किया कि दिल्ली से शोभालालजी गुप्त आये हैं और मेरे यहीं ठहरे हैं। आपको याद कर रहे हैं सो सुविधानुसार कभी भी उनसे मिललें।

यह समाचार पाकर मैं गुप्तजी से मिलने चला गया। गहरे गेहुंआ रंगी तन पर शुभ्र श्वेत खादी की एकलंगी धोती और जब्बे में स्मित हास लिये उन्होंने बड़ी आत्मीयता तथा स्नेहिल वात्सल्यता के साथ मुझे अपने में मिला लिया। कनकजी भी आ गये। कोई डेढ़ घंटे तक चाय-नाश्ते के साथ मेरे लेखन से लेकर जीवन परिवेश की बहुत सारी बातों की जानकारी लेते उन्होंने तब मेरे लेखन और हिन्दुस्तान में छपे आलेखों के बारे में अपना मंतव्य दिया। कनकजी ने उदयपुर की साहित्यिक हलचल से उन्हें विस्तार से बताया। उन्होंने मुझे कहा कि कभी दिल्ली आयें तो अवश्य भेंट करें।

भारतीय लोककला मंडल की प्रदर्शनधर्मी कला-यात्रा में एकबार मैं देवीलाल सामरजी के साथ दिल्ली गया तब उन्होंने मुझे दिनेशनंदिनी डालमिया से उनकी कोठी पर बड़ी आत्मीय भेंट कराई। उसी दौरान हमने गुप्तजी से भी उनके दैनिक हिन्दुस्तान वाले ऑफिस में भेंट की। सामरजी ने उनको कलामंडल में किये जा रहे कार्यों और देश-विदेश की उपलब्धियों की विस्तृत जानकारी दी। उनसे विदा लेते वक्त गुप्तजी ने मुझे कहा कि समय-समय पर आप इस तरह के आलेख भी मुझे भेजते रहें ताकि लोककला-संस्कृति की सुगन्ध सब ओर जगजाहिर हो और राजस्थान के रंग पूरे विश्व में अपनी ख्याति की अनोखी छटायें दे सकें। उनके निर्देशानुसार जब-जब भी मैंने प्रकाशनार्थ सामग्री भेजी, उन्होंने बड़ी बड़ाई के साथ उसका प्रकाशन दिया।

सोचता हूं, अब वैसे व्यक्ति कहीं देखने को क्यों नहीं हैं? यह समय का आलम है या हमारी समझ का अभाव।

शब्द रंजन

उदयपुर, मंगलवार 01 जनवरी 2019

सम्पादकीय

सेठियाजी का जन्म शताब्दी वर्ष

अगला वर्ष 2019, हिन्दी-राजस्थानी के मूर्धन्य कवि मनीषी श्री कन्हैयालाल सेठिया का जन्म शताब्दी वर्ष है। राजस्थान के सुजानगढ़ में 11 सितम्बर 1919 को सेठियाजी ने जन्म लिया और 11 नवम्बर 2008 को कर्मस्थल कोलकाता में उन्होंने अंतिम स्वांस ली। साहित्य सृजन के क्षेत्र में उनकी लिखी हिन्दी में 18, राजस्थानी में 16 तथा उर्दू में 2 कृतियां उनकी उत्कृष्ट काव्य-धारा की बोधक हैं। उनकी लिखी लीलटांस, निर्ग्रंथ, खुली खिड़कियां चौड़े रास्ते, प्रतिबिम्ब, अघोरीकाल एवं अनाम राजस्थानी, हिन्दी, अंग्रेजी, बंगला एवं मराठी में अनुवादित हैं।

पद्मश्री एवं स्वतंत्रता सेनानी के रूप में समादृत सेठियाजी को साहित्य मनीषी, साहित्य वाचस्पति सम्मान भारतीय ज्ञानपीठ, केन्द्रीय साहित्य अकादमी तथा महाराणा मेवाड़ फाउण्डेशन द्वारा प्रदत्त पुरस्कार एवं राजस्थान विश्वविद्यालय द्वारा प्रदत्त पीएच. डी. की मानद उपाधि जैसे अलंकरण प्रदान कर उनका यथेष्ट मूल्यांकन किया गया। राजस्थानी भाषा को संविधान की आठवीं अनुसूची में सम्मिलित कराने हेतु वे आजीवन सजग रहे।

ऐसे पुरोधा सुकवि सेठियाजी की जन्म शताब्दी पर उनकी स्मृति को अक्षुण्ण बनाने की दृष्टि से बहुत कुछ स्थायी महत्व के कार्य करने की आवश्यकता है। कुछ विचारणीय बिन्दु इस प्रकार हैं-

(1) भारत सरकार द्वारा डाक टिकिट जारी किया जाय।

(2) राजस्थानी भाषा को संवैधानिक मान्यता प्रदान की जाय।

(3) राजस्थानी भाषा साहित्य एवं संस्कृति अकादमी का नामकरण सेठियाजी के नाम हो।

(4) हिंदी-राजस्थानी अकादमियों द्वारा सेठियाजी के नाम से पुरस्कार प्रारंभ किया जाय।

(5) पत्र-पत्रिकाओं द्वारा सेठियाजी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर विशेषांक एवं प्रकाशन दिये जाय।

(6) विश्वविद्यालयों में सेठियाजी के नाम की पीठ प्रारंभ की जाय।

(7) सेठियाजी के कृतित्व को पठन-पाठन का विषय बनाया जाय।

(8) विद्वानों एवं छात्रों को शोध के लिए प्रवृत्त किया जाय।

(9) विविध प्रतियोगिताएं, संगोष्ठियां, सेमीनार तथा समारोह आयोजित हों।

सजग मंचों, जागरूक नागरिकों, सेवाभावी संस्थानों, शिक्षालयों तथा विद्वानों का ध्यान इस ओर अपेक्षित है।

महाराणा भूपालसिंह हकीकत बहिड़ा का लोकार्पण

उदयपुर। महाराणा मेवाड़ हिस्टोरिकल पब्लिकेशन्स ट्रस्ट, उदयपुर द्वारा नव प्रकाशित पुस्तक 'हकीकत बहिड़ा : महाराणा भूपालसिंह' (ई.स. 1930 से 1955) का विमोचन महाराणा मेवाड़ चेरिटेबल फाउण्डेशन के अध्यक्ष एवं प्रबंध न्यासी श्रीजी अरविन्दसिंह मेवाड़ ने शम्भू निवास में किया।

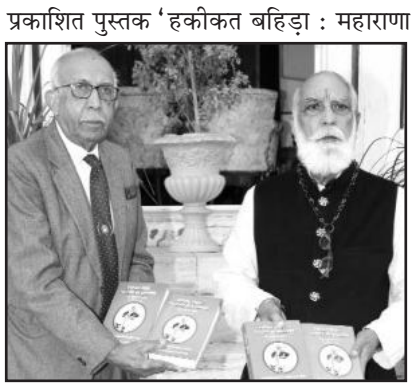

फाउण्डेशन मुख्य प्रशासनिक अधिकारी भूपेन्द्रसिंह आउवा ने बताया कि महाराणा भूपालसिंह ने प्रजाहित में अनेक कार्य किये जिनमें महाराणा भूपाल महाविद्यालय, बीएन महाविद्यालय, महाराणा भूपाल चिकित्सालय, अनेक शिक्षण संस्थानों को भूदान आदि प्रमुख हैं। भूपालसिंहजी कालीन बहियों से तैयार पुस्तक के चार भाग हैं, जिनमें कुल 2944 पृष्ठों के साथ ही कई यादगार एवं ऐतिहासिक श्वेत-श्याम तथा रंगीन चित्रों का समावेश किया गया है। पुस्तक पर मेरे साथ पब्लिकेशन्स ट्रस्ट के प्रबंधक गिरिराजसिंह तथा महाराणा मेवाड़ अनुसंधान केन्द्र के जनकसिंह चौहान, सतीष पुजारी ने सावधानीपूर्वक कार्य किया। पुस्तक का विषयानुसार वर्गीकरण श्रीमती सरिता श्रीमाल ने तथा महाराणा के जीवन-वृत्तांत का ऐतिहासिक लेखन इतिहासविज्ञ डॉ. राजेन्द्रनाथ पुरोहित ने किया।

पत्र-पिटारी

सरकती हुई समय की रेत-घड़ी

शब्द रंजन के 15 नवम्बर 2018 के अंक में प्रकाशित 'गुरुकुल का विदाई समारोह' को पढ़कर अहमदाबाद से डॉ. महेन्द्र भानावत को लिखे गुरुवर सागरमलजी बीजावत के पत्र के प्रमुख अंश

तुम्हारे शब्द रंजन की प्रति हर समय पर निश्चित समय पर मिल जाती है। पत्रिका का वस्तु वैविध्य देखकर प्रसन्नता होती है। अबकी बार की खोज खबर में गुरुकुल के विदाई समारोह एवं मेरे लिखित कागज की चिन्दी का संरक्षण तुमने जिस लगाव से किया, उसके लिए धन्यवाद। अब तो वह कागज का टुकड़ा जर्जर हो गया होगा। स्याही मन्द हो गई होगी। लिखावट धूमिल और पठनीय नहीं होगी। शिरोधार्य करने योग्य तो तुमने कई साहित्यिक नई कृतियों का सृजन किया है जिनका वस्तु विन्यास आगे की पीढ़ी के लिए प्रेरक एवं रंजक है। नई पीढ़ी को बधाई कि उसे ज्ञान का ऐसा अटूट खजाना मिला है।

गुरुकुल के वे वर्ष बहुत आनन्द और उल्लासमय थे। उनकी याद की मिठास और मधुरिमा आज भी वैसी ही अक्षुण्ण है। सन् 1965 में गुरुकुल छोड़कर केन्द्रीय विद्यालय में जाने पर नया वातावरण मिला। बहुत कुछ नया सीखा और आज आनन्द में हूं। सरकारी नौकरियों में स्थानान्तरण भी एक देन है जो अवस्था की जड़ता से मनुष्य को मुक्तकर नये डग भरने के लिए प्रोत्साहित करती है।

वल्लभ विद्यानगर, राजकोट, अंबरनाथ, नागपुर, अहमदाबाद होते हुए लखनऊ और फिर आंध्र तथा कर्नाटक राज्य की तीर्थयात्रा करते हुए वापस अहमदाबाद आया हूं। इस समय में भारतवर्ष के अधिकांश नामांकित विद्यालयों और उनके कार्यकलापों को भी देखने का अवसर मिला परन्तु छोटीसादड़ी का वह सुख नहीं मिलना था सो नहीं ही मिला। समय की रेत की घड़ी सरक कर खाली हो गई है और अब ऐसा कुछ नहीं है जिसे मैं अपना कह सकूं।

खोज तो पुराने ढेर में से काम की वस्तु ढूंढ़ने को कहते हैं और खबर तो हमेशा कुछ नया लिये होती है। अब न तो खोज है न खबर ही। जो कुछ है उसी से संतुष्ट हूं। लोग समय-समय पर याद कर लेते हैं वही बड़ा सुख है। अपने लोगों में यह सुख बांट कर अपने को धन्य समझ लेता हूं।

गुरुकुल के उस समय के शिक्षकों की जो विशेषताएं बताई हैं वे उपयुक्त हैं। ऐसे शिक्षक मिलना आज दुर्लभ है। हेड मास्टर नेमिचंदजी सुराणा, गुरुदत्तजी, राधामोहनजी पुरोहित, शोभाचन्दजी वया, पुखराजजी ढाबरिया, कन्हैयालालजी शर्मा 'अनंत', नानालालजी मट्ठा आदि ऐसे व्यक्तित्व थे जैसे मैं उनका ही रूप था, हूं। तुम्हारे पुरुषार्थ ने जो तुम्हें गुण दिये वे किसी के लिए भी ईर्ष्या की वस्तु हैं। शेषमलजी चोरड़िया की लिखी कविता-पैरोड़ियां याद आ रही हैं-

(अ) आज मंगलमय प्रहर है, अश्रु भी शुभ शकुन होते।
वेदनाएं प्यार बनती मुक्ति में वरदान खिलते।।

(ब) लम्बा ताड़ ताराचंद चड़स जोत कर थकता।
ढाई हाथ का यह एम.ए. बीटी कुर्सी नहीं ढक सकता।।

(स) ये छोकरे भी मास्टर पुखराज सागरमल।
इनसे तो अच्छे हैं हमारे मीर मगनमल।।

और सिरेमल सेठिया की पैरोडी-

पंडित शोभाचंद्र देखो, जन्तर देखो, मन्तर देखो।
बिना तैल के बाल देखो, लपक-झपक की चाल देखो।
ढाबरिया पुखराज देखो, कंघा देखो कांच देखो।।

परमेश्वर की कृपा है। तुम्हें दी गई चिन्दी में जो कुछ लिखा वह पूर्णतया सत्य बना। तुम महेन्द्र के रूप में ही हो। सरस्वती की अपूर्णता पूर्णता में झांक रही है। भावी जीवन का भाग्यांकन कर सकूं, वह क्षमता और सामर्थ्य न तो तब था और न अब। तुम्हारे भाग्य में जो लिखा था, वह ही मुझसे लिखा गया। अंकन करने वाला मैं कौन होता हूं। इस लेख पर बनवारीदत्त जोशी से बात हुई। वह भी गजब का प्रतिभाशाली व्यक्तित्व निकला।

तुम्हारा चन्दरी बुआ, गुरुकुल का विदाई समारोह एवं सम्पादकीय न केवल पठनीय है अपितु शीघ्र क्रियान्वय के लिए उपयुक्त है।

बधाई

भोपाल की मधुबन संस्था के संस्थापक पं. सुरेश तांतेड़ गुजरात के कांडला-कच्छ में 25 दिसम्बर 2018 को अपने 75वें जन्म दिवस के शुभ अवसर पर।

उल्लेखनीय है कि मधुबन संस्था के माध्यम से पं. तांतेड़ साहित्य संस्कृति एवं कला के क्षेत्र में ख्यात-प्रख्यात विभूतियों एवं मनीषियों को प्रतिवर्ष सम्मानित कर श्रेष्ठ कला आचार्य जैसे सम्बोधन के लिए जाने जाते हैं। शब्द रंजन की हार्दिक बधाई।

सम्मान

शाकुन्तलम की संस्थापिका डॉ. शकुन्तला पंवार एवं सचिव गोवर्धन पंवार द्वारा डॉ. महेन्द्र भानावत का लोकसंस्कृति रत्न सम्मान।

तामीर सोसायटी के संस्थापक डॉ. इकबाल सागर द्वारा डॉ. महेन्द्र भानावत का संस्कृति सेतु सम्मान।

कहावतों के कहकहे (8)

(83) कांजरा वाड़ क्यूं बाळी कै लदवारी देर है
(84) काजीजी तो भण्या जो भण्या पण ऊंदराई भण्या
(85) कांजी रै कसी जड़ व्है
(86) कांटी रौ जोर आकड़ा तक
(87) काठ की हांडी दूजी दाण नीं चड़ै
(88) काठ हाई छोड़ो पड़ै
(89) कांणा खोड़ा कूबड़ा सिर सूं गंजा होय यां सूं वातां जद करो हाथ में डंडौ होय

स्मृतियों के शिखर (66) : डॉ. महेन्द्र भानावत

ढोल शारदा है हजारी के लिए

'ढोल हमारी शारदा है। सुरसत माई है। यह ज्ञान देती है। अज्ञान हरती है साथ ही रोटी-रोजी देकर परिवार को चंगा रखती है इसलिए ढोल की हम लोग पूरी हिफाजत रखते हैं। आदर-सम्मान व्यक्त करते हैं। इसके प्रति उसी प्रकार का पूजित-भाव रखते हैं जैसा देवी-देवता के प्रति रखते हैं। यह रूठ जाये तो हमारा जीना मुश्किल हो जाय।

इसलिए कहावत चली- 'ढोल में पोल' यानी बेखरी मत रखो। निरन्तर उसकी खैर-खबर लेते रहते हैं कारण कि कब किसके घर इसे बजाने जाना पड़ जाय, कुछ पता नहीं रहता। हर समय ढोल और बजाने वाले को तैयार रहना पड़ता है जैसे सैनिक हर समय दुश्मन से दो-दो हाथ होने को तैयार रहता है। शोक की मुक्ति के लिए भी ढोल बजता है।'

यह कहना है हजारी ढाढ़ी का जिनसे मैंने शिल्पग्राम में 22-23 नवम्बर 2006 को भेंट की। ये चुई गांव, पोस्ट चुवा, तहसील डेगाना, जिला नागौर के रहने वाले हैं। यहां हजारी (60) अपने अन्य दल-सदस्यों के साथ हैं। इनमें हजारी का पुत्र हिदायत (22), अनुज-पुत्र निजाम (15), महावीर (13) तथा मनीष (7) के साथ चाचा-पुत्र हमीद (8) था। बातचीत के दौरान हजारी ने बताया कि उनके परिवार के सदस्यों के नामकरण हिन्दू तथा मुसलमान दोनों से संबंधित हैं कारण कि चुई गांव में उनके मात्र 20 घर हैं जबकि 1100 घर अन्यों के हैं जो हिन्दू हैं।

ढोल इनका मुख्य वाद्य ही नहीं, आजीविका का प्रमुख स्रोत भी है। इसके वादन के साथ इनकी आजीविका तथा अन्यों के जातिगत संस्कार, मंगल-अमंगल के अवसर, पर्व-त्यौहार तथा अन्य परम्पराएं जुड़ी हुई हैं। अपने क्षेत्र में ये ढाढ़ी नाम से जाने जाते हैं जबकि सीकर-झुंझुनू की ओर इन्हें कलावंत कहते हैं। रेगिस्तानी इलाके जैसलमेर-बाड़मेर की ओर ये मांगणियार नाम से जाने जाते हैं।

अपने बालमन से ही हजारी को ढोल से लगाव लगा। यह ऐसा लगाव था कि खिलौने की जगह उन्होंने ढोल से ही खेल खेले सो खेलते-खेलते वे उसमें पूरे ही भर गये। उनका अनुभव बड़ा विस्तार लिये परिपक्व है। पचासों तरह की जानकारियों से समृद्ध उन्होंने सभी बातें खुलकर बताईं। बोले - 'रामजन्म पर वे बधावण गाते हैं। बधावण से तात्पर्य बधाई-संदेश से है। यह शुभ, मंगल, हरख तथा उल्लास का प्रतीक है। इससे जीवन खुशियों से भर जाता है।' इनकी जाति में प्रथम ढोल वादक अग्रदाय हुए जिनके सम्बन्ध में इन्हें कुछ और जानकारी नहीं है।

शादी-विवाह तथा बालजन्म के अवसर पर इनके द्वारा जो ढोल वादन किया जाता है वह मंगल का सूचक है। इस मंगल का प्रभाव जहां-जहां तक उसकी गूंज सुनाई देती है वहां-वहां तक देखा जाता है। इनके मुख्य यजमान राजपूत, जाट, ब्राह्मण तथा बनिया जाति के लोग हैं। उनके हर मौके पर ये ढोल बजाने बुलाये जाते हैं। इस बुलावे पर इनका नेगचार बंधा हुआ है। इसी नेगचार से इनका परिवार चलता है। यजमान इनको बधावणा चुकाते हैं। सबके बंधाबंधाया नेगचार है। किसी भी कार्य का प्रारम्भ ढोल वादन से और सारे नेगचार-संस्कार भी इसी से पूरे होते हैं।

महिलाओं की भागीदारी के सम्बंध में पूछने पर हजारी ने बताया कि ढोल अकेला पुरुष तो बजाता ही है, महिला भी बजाती है। शुभराज अर्थात् मंगल मुजरा करते समय केवल डाका लगता है। धमाल नहीं बजती है। शुभराज के दोहे चलते हैं। दोहों में यजमान का गुण-गौरव, यश-गान चलता है। बढ़ा-चढ़ा कर मंगल भावनाएं प्रकट की जाती हैं।

ढोल बजाने तथा गायकी देने में महिला-पुरुष की भागीदारी स्पष्ट करते हजारी बोले- पुरुष गाता है जब ढोल नहीं बजाता है लेकिन महिला गाती हुई बजाती जाती है। इसके अलावा पुरुष खड़ा-खड़ा ढोल बजाता है जबकि महिला बैठी-बैठी बजाती है।

ढोल बजाने की क्रिया समझाते हजारी ने ढोल अपने हाथ में लेकर उसके प्रत्येक भाग को ठीक से प्रस्तुतिपूर्वक बताया और कहा कि व्यक्ति जब ढोल बजाता है तब उससे बंधी रस्सी गले में पहनी जाती है। ढोल कमर तक रहता है। इसे एक हाथ में डाका (डंका) रखकर बजाया जाता है जबकि दूसरे हाथ की ताल लगाई जाती है। ताल चार अंगुली की संयुक्त लगती है। इसमें अंगूठा मुक्त रहता है। बीच-बीच में पूरे हाथ से थप्पी लगती है।

सहायक वादक के रूप में एक अन्य व्यक्ति चिमटाली लगाता है। यह चिमटाली बांस की छोटी पतली चिमटी होती है। चिमटाली दोनों हाथों में एक-एक होती है। इसे लगाने वाला व्यक्ति घुटनों के बल बैठकर बजाता है। चिमटाली ढोल की कोर यानी किनारे पर लगाई जाती है। इससे आवाज द्रुत यानी तेज हो जाती है।

अपने पुत्र हिदायत और महावीर को बुलाकर चिमटाली लगाने की क्रिया बताते विभिन्न बजावों की धीमी, मध्यम तथा तेजी देती बजावट

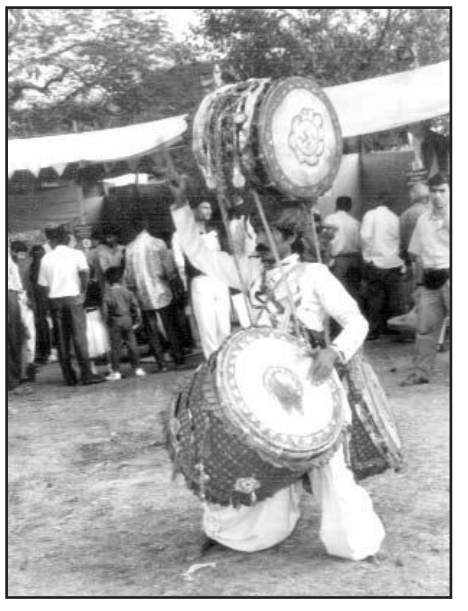

में वहां उपस्थित अन्यों को भी चकित कर दिया। इस समय उनके परिवार के सभी लोगों में मैंने जोश भरा पाया। हजारी की स्फूर्ति देखते ही बनती थी। उनके लिए ढोल एक फुटबाल की तरह लग रहा था जिस पर वे मनचाहे बजावणे निकाले जा रहे थे। बोले - ढोल की आवाज से पता चलता है कि ढोल किस काज अवसर याकि मौके का बज रहा है।

उन्होंने स्पष्ट किया कि ढोल के साथ महिलाएं गाती हैं और नाचती भी हैं। बजाने की शैली के आधार पर ढोल द्वारा किया जाने वाला कार्य समझ लिया जाता है। यों विशिष्ट जातियों में जिस बजावणी का ढोल प्रचलित है उसके नाम जुदा-जुदा हैं। राजपूतों में 'घूमरबाज' ढोल का प्रचलन अधिक मिलेगा जबकि जाटों-बनियों में 'मटकी बाज' ढोल का प्राधान्य मिलेगा। इन बजावटों में मुखड़ा निकालने की शैली का अपना विशेष अन्दाज होता है। यह मुखड़ा डाके से भी निकाला जाता है। घूमर चूंकि धीमा पटा का नाच है अत: उसके साथ ढोल बजाने की विधि धीमी-धीमी होती है। थप्पी में से भी मुखड़ा निकल सकता है पर यह कार्य होशियार और कुशल वादक से ही सम्भव है।

अभ्यास, रूचि और सीखने की ललक से वादक अपने अनुभवों के आधार पर कई चीजें नई निकालता रहता है। ढोल से नेह रखने पर तो ढोल स्वयं ही बहुत सारी चीजें सीखा देता है। इन सबके लिए किसी तरह के प्रशिक्षण की व्यवस्था इनमें नहीं पाई जाती।

एक-दूसरे को देखकर ही व्यक्ति तैयार हो जाता है। इस तरह कला के गुण पीढ़ी-दर-पीढ़ी अपनेआप हस्तांतरित होते रहते हैं। संगति और सीखने की हलक तो होती ही है। भांबी को ये मेघवंशी और रेगर को रैदास कहने लग गये हैं। इनका बहीवाचक भटिया कहलाता है। कुचामण में बहीवाचकों के बारह घर हैं।

हजारी के अनुसार जमाना अब बदल रहा है। जो चीज पहले थी, अब नहीं रही। टीवी सिनेमा के आगे स्वयं उनको भी उनकी चीज फीकी लगने लग गई है और अब केवल उसी में कलाकारी से काम नहीं चलता जो उनके पास पहले से चली आ रही है। यजमान भी कई चीजों की फरमाईश करने लग गये हैं। उन्हें उनकी चाह के अनुसार राजी रखना पड़ता है तभी तो वे अच्छी भेंट-भेंटावण देते हैं अन्यथा तो चलते कर देते हैं। नया किससे और कैसे सीखें यह इनके बूते की बात नहीं है। वैसा मन बने तो बात बने।

ऋतु और फसल के मेलमिलाप के सम्बंध में हजारी ने स्पष्ट किया कि बाजरा, ज्वार की सावणी फसल पक जाने पर उसे काटने के लिए पांच-पचास व्यक्ति मिलकर संडा करते हैं। ऐसी स्थिति में पांवों में घुघरू पहन वादक ढोल और मटकी पर बड़ी खटकेदार धुन निकालते हैं। इससे सभी के पांव नृत्य के लिए ठुमक पड़ते हैं। इस समय एक व्यक्ति दोहा देता है। उसके अनुसार वादक मटकी तथा ढोल पर बजाई शुरू करते हैं। आधे लोग नृत्यमग्न हो थिरक उठते हैं जबकि आधे फसल का ऊपरी हिस्सा जिसे कड़ब कहते हैं, काटना प्रारम्भ करते हैं।

ढोल वादक नर्तकों के पीछे-पीछे चलता रहता है। इस क्रिया से श्रम बोझ नहीं लगता। सेंतमेंत में ही अनुरंजन से सारा काम सुगम हुआ लगता है। फटाफट नर्तक-श्रमिक पारी बदलते रहते हैं। दूसरे दौर में गाने वाले कड़ब काटने लग जाते हैं। ढोल वादक मस्त-मस्त मुद्रा में निरन्तर ढोल बजाता रहता है। दूहे चलते रहते हैं और उनके साथ नर्तक एक नई दुनियां दिखाते लगते हैं। दूहे का नमूना-

सांझ पड़ी दन आथम्यो,
आई गुवाड़े गाय।
कानकंवर की आरती,
करे जसोदा माय।।

ऐसे प्रत्युत्पन्न मति-गति से दूहाबाज वहां के वातावरण से प्रभावित होकर भी नये-नये दूहे रचकर आनंदमग्न होता सबको रंजित किये रहता है।

कड़ब काटने के अलावा खेत में कई तरह के झाड़-झंखाड़, झाड़के आदि होते हैं। उनकी सफाई भी इसी तरह की जाती है। यह एक प्रकार से हेलमेल की, सहकार की, एक-दूसरे के सहयोग की, सम्मिलन की भावना का विस्तार है। इससे पूरे गांव में एकठ बनी रहती है और जहां भी जरूरत पड़ जाती है वहां समूहबद्ध पहुंचा जाता है। झाड़के काटने को 'पाला काटना' कहते हैं। कार्तिक में आयोजित होने के कारण इस नृत्य को 'कातीसर का नाच' कहते हैं।

हजारी घूमफिरकर पुन: ढोल पर अपनी बात केन्द्रित किये रहते हैं। बोलते हैं, ढोल छूटता नहीं है। यही जीवनदाता भी है। इसलिए सब वाद्यों में ढोल बड़ा वाद्य कहा जाता है। इसके दोनों ओर की पुड़ियां बकरे की खाल से मढ़ी जाती है। गूंज देने में अन्य जानवरों की खालें पोची हैं। इसका खोल औसतन ढाई से तीन फीट लम्बा तथा दो से ढाई फीट चौड़ा होता है। लोहे की सपाट चादर की परतों से बनाया जाता है। परतों को कीलों से आपस में जोड़ा जाता है। कीलों को रिपटें कहते हैं जो लोहे की या फिर तांबे की होती हैं।

खाल के सिरों में लकड़ी की खपचियां डाल लपेटते हुए कुंदल यानी गजरे बनाये जाते हैं। ये गजरे खोल के मुख पर पिरो दिये जाते हैं। गजरों को समान दूरी पर छेद कर गोलाई में बांध दिया जाता है। ऐसा करते समय डोरी में पीतल अथवा लोहे के छल्ले पिरोये जाते हैं। ये कड़ियां अथवा छल्ले डोरी में तनाव बनाये रखने का काम करते हैं। बजाने वाला इन्हें खींचकर अपने ढंग से उनका मिलान बिठाता है।

हजारी द्वारा हर चीज बारीकी से समझाने-बताने पर वहां उपस्थित एक बूढ़े देशी पर्यटक ने कहा कि अपनी कमाऊ चीजों का भेद हर एक को नहीं बताना चाहिए।

इस पर हजारी बोला- बासा, आपका कहना सही है किन्तु ढोल बजाना इतना सरल तथा आंख मींच कर सीखने की विद्या नहीं है। मैं कितना ही बताऊं, केवल बताने से कोई हमारी जगह नहीं ले सकता।

ढोल की आवाज बड़ी बुलन्द और देर तक गूंज देने वाली होती है। देवी-शक्ति के आह्वान के लिए इसे निरन्तर और तेज गति से बजाया जाता है। ढोल के एक नहीं, अनेक, अनेकानेक करतब हैं। अच्छे होशियार कलाबाज एक साथ पांच-पांच ढोल बजाकर सबको चकित किये रहते हैं। ढोल पर जितनी तरह के डाके उतनी तरह के कार्य सिद्ध होते पाये गये हैं।

दिल में छेद के तीन सफल ऑपरेशन

उदयपुर। पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (पीआईएमएस) उमरड़ा में चिकित्सकों ने एक वर्षीय बच्ची एवं आठ वर्षीय दो बच्चों के दिल में छेद के सफल ऑपरेशन किये हैं।

पीआईएमएस के चेयरमेन आशीष अग्रवाल ने बताया कि वल्लभनगर निवासी एक वर्षीय बालिका के दिल में छेद कि वजह से फेफड़ों की धमनियों में पेशर बढ़ जाता था। इसके लिए समय पर ऑपरेशन करना जरुरी था। गत दिनों बच्ची के परिजन उसे लेकर पीआईएमएस आए जहां उसका सफल ऑपरेशन किया गया।

इसी प्रकार गिर्वा उदयपुर निवासी आठ वर्षीय बालक एवं वल्लभनगर निवासी आठ वर्षीय बालक के दिल में छेद था। इसकी वजह से उसका वजन ना बढ़ना, खेलने कूदने पर सांस का फूल जाना तथा निरंतर बुखार रहता था। पीआईएमएस में इन दोनों बच्चों का ऑपरेशन कर दिल का छेद बंद किया गया। ये तीनों ऑपरेशन कार्डियक सर्जन डॉ. सुदीप चौधरी, कार्डियोलॉजिस्ट डॉ. संदीप गोलछा एवं कार्डियक एनेस्थेटिस्ट डॉ. राकेश भार्गव की टीम द्वारा किये गए। ऑपरेशन के बाद तीनों बच्चे स्वस्थ हैं और उन्हें अस्पताल से डिस्चार्ज कर दिया गया है।

टाटा मोटर्स की नई डीलरशिप का उद्घाटन

उदयपुर। टाटा मोटर्स ने उदयपुर में एक नये अत्याधुनिक फुल-रेंज पैसेंजर व्हीकल डीलरशिप और वर्कशॉप, शेखावटी एन्टरपाइजेज का उद्घाटन टाटा मोटर्स प्रतिनिधियों द्वारा किया। इस शोरूम को राजस्थान में एक ही दिन में छह डीलरशिप्स के उद्घाटन के एक हिस्से के रूप में लॉन्च किया गया।

इन शोरूम एवं वर्कशॉप के उद्घाटन के साथ कंपनी ने श्रेणी में अग्रणी अपने ऑटोमोटिव अनुभव का विस्तार किया है। यह डीलरशिप टाटा मोटर्स की टर्नराउंड 2.0 रणनीति के अनुरूप, इसकी आक्रामक नेटवर्क विस्तार योजनाओं की दिशा में उठाया गया एक कदम है। उदयपुर में कंपनी के कुल 2 सेल्स आउटलेट्स हैं। यह डीलरशिप 10000 वर्ग फीट में फैला हुआ है और यह उदयपुर में मादड़ी इंडस्ट्रीयल एरिया में स्थित है। यह डीलरशिप टाटा मोटर्स की नई पीढ़ी की पैसेंजर कारों की बेमिसाल रेंज के साथ शहर के आकांक्षी ग्राहकों की जरूरतों को पूरा करेगी।

टाटा मोटर्स में पैसेंजर व्हीकल बिजनेस यूनिट के प्रेसिडेंट मयंक पारीक ने कहा कि चूंकि हमारे ब्रांड वादे के मूल में 'कनेक्टिंग एस्पिरेशंस' पर खरा उतरना है। टाटा मोटर्स में हम अपने नेटवर्क पार्टनर्स के साथ मिलकर उपभोक्ताओं को सॉलिड प्रॉडक्ट और शोरूम का बेहतरीन एक्सपीरियंस देना चाहते हैं। अपनी टर्न अराउंड 2.0 यात्रा के एक हिस्से के रूप में हम बिजनेस के अलग-अलग तरीकों के प्रति अपने को अनुकूल बना रहे हैं।

लैंड रोवर जर्नीज की पेशकश

उदयपुर। जगुआर लैंड रोवर इंडिया ने 'लैंड रोवर जर्नीज' को पेश करने की घोषणा की है। इसे भारत में लैंड रोवर वाहनों के मालिकों के लिये कोगर मोटरस्पोर्ट द्वारा खासतौर से तैयार किया गया है। 'लैंड रोवर जर्नीज' लॉन्ग डायनैमिक-ड्राइव एक्सपेडिशन्स का एक अनूठा समूह हैं, जो ग्राहकों को अपना लैंड रोवर वाहन लाने और भारत की सर्वाधिक प्रमुख संस्कृतियों एवं भूस्थलों का अनुभव लेने में सक्षम बनायेगा। साथ ही वे अपने लैंड रोवर्स वाहनों की क्षमता को एक्ससप्लोर भी कर पायेंगे। जगुआर लैंड रोवर इंडिया के प्रेसिडेंट और मैनेजिंग डायरेक्टर रोहित सूरी ने कहा कि लैंड रोवर वाहनों की दिग्गज क्षमतायें रोमांच के नये द्वार खोलती हैं और हमारे ग्राहकों एवं उनके परिवारों को जीवन के अनूठे अनुभवों के करीब लेकर आती है। लैंड रोवर जर्नीज के साथ, हमारा प्रयास हमारे ग्राहकों के साथ अधिक गहरे स्तर पर जुड़ना और ऐसे अनुभव को पेश करना है, जिनसे उन्हें जीवन भर प्यार रहेगा। पहली 'लैंड रोवर जर्नी' ब्रह्मपुत्र एक्सपीरिएंस होगी और इसका आयोजन 26 जनवरी से 1 फरवरी 2019 तक पूर्वोत्तर भारत में किया जायेगा। कागर मोटरस्पोर्ट की प्रशिक्षित लैंड रोवर इंस्ट्रक्ट की एक समर्पित टीम ड्राइव एवं लॉजिस्टिक्स को प्रबंधित करेगी।

आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल लाइफ और व्हाट्सएप में भागीदारी

उदयपुर। आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल लाइफ इंश्योरेंस कंपनी भारत की पहली ऐसी जीवन बीमा कंपनी बन गई है जिसने व्हाट्सएप के साथ सीधा एकीकरण किया है। इसके बाद कंपनी वैश्विक स्तर पर लोकप्रिय मैसेजिंग प्लेटफॉर्म पर एक सत्यापित व्यावसायिक खाता रखने में सक्षम हो गई है। आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल लाइफ व्हाट्सएप मैसेजिंग प्लेटफॉर्म का उपयोग ग्राहक सेवा चैनल के रूप में करेगा।

आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल लाइफ इंश्योरेंस के उप प्रबंध निदेशक पुनीत नंदा ने कहा कि यह कंपनी द्वारा अपनाई गई नवीनतम डिजिटल पहल है जो ग्राहकों को उनकी जीवन बीमा पॉलिसी के विवरण तक आसान पहुंच प्रदान करती है। व्हाट्सएप पर संदेश प्राप्त करने के लिए सहमति रखने वाले ग्राहक स्वागत किट, पॉलिसी प्रमाणपत्र, प्रीमियम रसीदें व्हाट्सएप पर प्राप्त कर सकेंगे और साथ ही वे कई अन्य सेवाओं का लाभ भी उठा सकते हैं। मैसेजिंग प्लेटफॉर्म पर उच्च स्तर के एन्क्रिप्शन के कारण यह सुनिश्चित होता है कि ग्राहक से प्राप्त और उसके साथ साझा की गई जानकारी गोपनीय बनी हुई है। व्हाट्सएप के साथ औपचारिक रूप से साझेदारी करने में हमें खुशी का अनुभव हो रहा है। अब हमारे पास मैसेजिंग प्लेटफॉर्म पर व्हाट्सएप वेरिफाई बिजनैस अकाउंट है। हम हमेशा अपने ग्राहकों को बेहतर सेवाएं देने के लिए नई सुविधाएं जोड़ना चाहते हैं।

डॉ. मेहता को अतिविशिष्ट सेवा पुरस्कार

उदयपुर। जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ, (डीम्ड-टू-बी-विश्वविद्यालय) फिजियोथैरेपी

विभाग, डबोक के प्राचार्य डॉ. शैलेन्द्र मेहता को नई दिल्ली एआईआईएमएस में सम्पन्न हुई 7वीं अन्तर्राष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस में केन्सर रिहेबलिटेशन के क्षेत्र में विशिष्ट कार्य के फलस्वरूप अतिविशिष्ट सेवा पुरस्कार से सम्मानित किया गया। डॉ. मेहता को यह पुरस्कार भारत सरकार के चिकित्सा एवं परिवार कल्याण मंत्री अथवनीकुमार चौबे, निति आयोग के सदस्य डॉ. विनोद पॉल, एआईआईएमएस नई दिल्ली के निर्देशक डॉ. रणवीर गुलेरिया द्वारा प्रदान किया गया। उक्त कॉन्फ्रेंस में भारत, अमेरिका, सऊदी अरब, ऑस्ट्रेलिया, यूरोप आदि देशो के लगभग एक हजार प्रतिभागियों ने भाग लिया।

स्टेट-ऑफ-द-आर्ट क्रिकेट एकेडमी लॉन्च

उदयपुर। सहारा इंडिया परिवार, विशाल भारतीय व्यवसाय दिग्गज व भारत में खेलों के सबसे बड़े संरक्षक ने लखनऊ में अपनी तरह की सर्वप्रथम हाईटेक क्रिकेट एकेडमी जो कि स्टेट-ऑफ-द-आर्ट सुविधाओं से युक्त है का उद्घाटन सहाराश्री सुब्रत रॉय सहारा ने प्रशिक्षार्थियों, उनके माता-पिता तथा स्टेकहोल्डर्स के समक्ष उद्घाटन किया। यह एकेडमी नई पीढ़ी के इन लड़के - लड़कियों को विश्वस्तरीय प्रशिक्षण देगी जो क्रिकेट में उत्कृष्टता का लक्ष्य रखते हैं। यहां सब-जूनियर (9 से 12 वर्ष), जूनियर (13 से 15 वर्ष) तथा सीनियर (16 से 23 वर्ष) की श्रेणियां होंगी। इन्हें चीफ मेंटर कपिल देव और अन्य वर्तमान व पूर्व दिग्गज खिलाड़ियों जैसे कि सुरेश रैना, बलविंदरसिंह सन्धू, आरपी सिंह, के साथ-साथ अनुभवी राज्य स्तरीय खिलाड़ियों तथा लेवल 1 व लेवल 2 के जाने-माने क्रिकेट कोचों द्वारा मार्गदर्शन व प्रशिक्षण दिया जाएगा।

सुब्रत रॉय सहारा ने कहा कि आल राउंड प्रशिक्षण देने के लिए एकेडमी में 14 पिचें हैं ताकि प्रशिक्षार्थियों को विभिन्न पिच परिस्थितियों पर प्रैक्टिस मिल पाए। दो पूरी तरह कवर्ड व बॉक्स नेट युक्त इंडोर एस्ट्रो टर्फ़, 3 सेंटर टर्फ़ पिंचे, 7 टर्फ़ व 2 सीमेंट वाली प्रैक्टिस पिचें हैं। यहां इस बात का विशेष ध्यान दिया गया है कि प्रशिक्षण साल के 365 दिन निर्विध्न चले और मौसम के बदलावों से प्रभावित न हो। इस एकेडमी में सिटिंग गैलरी युक्त पैवेलियन, इमर्जेन्सी केस के लिए इन्फर्मरी जहां फिजियोथेरेपिस्ट, फर्स्ट एड व एम्बुलेंस उप्लब्ध होंगे। साथ ही ऑडियो विजुअल युक्त कॉन्फ्रेंस रूम, बॉलिंग मशीन व स्पीड गन होंगे ताकि वास्तविक खेल के मैदान की करीबी नकल तैयार की जा सके।

शिविर में 80 यूनिट रक्त संग्रहण

उदयपुर। नारायण सेवा संस्थान हिरण मगरी सेक्टर- 4 स्थित मानव मंदिर में रविवार को सरल ब्लड बैंक के सहयोग से पद्मश्री कैलाश 'मानव' के सान्निध्य में रक्तदान शिविर आयोजित किया गया जिसमें रक्तदाताओं से 80 यूनिट रक्त संग्रहित किया गया।

शिविर का उद्घाटन संस्थान अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल, संस्थान निदेशक वंदना अग्रवाल व सरल ब्लड बैंक के डॉ. नरेश यादव ने दीप प्रज्वलित कर किया। इसमें युवाओं, वयस्कों के अतिरिक्त महिलाओं ने भी बढ़चढ़ कर हिस्सा लिया। संस्थान संस्थापक कैलाश मानव ने कहा कि मौजूदा दौर में रक्त एक महत्ती आवश्यकता बनकर उभरा है। रक्तदान सबसे उत्तम दान है इससे कई जिंदगीयां मौत से बचती हैं। प्रशांत अग्रवाल ने कहा कि मानवता की सेवा ही सबसे बड़ा धर्म है। रक्तदान से खून की कमी से जूझ रहे अथवा दुर्घटनाओं में गंभीर रूप से घायलों की जान बचाई जा सकती हैं। इसीलिए रक्तदान को महादान कहा गया है। वंदना अग्रवाल ने कहा की युवा भी रक्त के महत्व को ध्यान में रखकर रक्त को नालियों की बजाए नाड़ियों में बहाएं। हम रक्तदान करके न केवल एक व्यक्ति की जिंदगी बचाते हैं बल्कि उसके साथ जुड़े समूचे परिवार की जिंदगी बचाते है। शिविर में सभी रक्तदाताओं को सम्मान प्रमाण पत्र व उपहार प्रदान किए गए। रक्त संग्रहण में सरल ब्लड बैंक के योगेन्द्र सिंह धीरावत, विक्रांतसिंह सांखला, कुशल गर्ग, अर्जुनलाल कुम्हार व युसुफ मोहम्मद ने सहयोग किया।

हिन्दुस्तान जिंक़ 5 एस से सम्मानित

उदयपुर। क्वालिटी कॉन्सेप्टस 2018 एनसीक्यूसी द्वारा 32वें राष्ट्रीय सम्मेलन में हिन्दुस्तान जिंक़ की केन्द्रीय अनुसंधान एवं विकास प्रयोगशाला को 5 एस जापनिज साइंटिस्ट एवं इंजिनियर्स संघ जूस ने प्रमाण-पत्र से सम्मनित किया है। यह समारोह ग्वालियर चैप्टर द्वारा एबीवी आईटीएम क्वालिटी सर्कल फोरम इण्डिया में यूनियन ऑफ जापनिज साइंटिस्ट एवं इंजिनियर्स संघ के सहयोग से आयोजित किया गया। मुख्य अतिथि केंद्रीय श्रमिक शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष पश्चिमी प्रभाग-एचजे पण्डया और क्यूसीएफआई के अध्यक्ष-एसजे कालोखे द्वारा 5 एस के आवश्यक मानकों को सफलतापूर्वक आरोपण के लिए जिंक़ की सीआरडीएल के अधिकारी हर्ष त्रिवेदी एवं सुमन कुमार को प्रदान किया गया।

उदयपुर में मीरांमय.....

(पृष्ठ एक का शेष)

मीरां की चुनौती समग्र समाज के प्रति थी। वह संपूर्ण युग के खिलाफ लड़ी। उसकी उपासना में भी एक ऐसा माधुर्य था कि उसके जो साध्य थे, तत्कालीन शक्ति के जो अधिष्ठाता थे, उन सबको मीरां ने एकदम मौन कर दिया।

सूर और अष्ट छाप के कवियों ने गोपी, यशोदा, ग्वाल, गाय, ब्रज आदि माध्यमों के द्वारा कृष्णलीला का वर्णन किया, किंतु मीरां को तो उसके तथा उसके गिरधर गोपाल के वर्णन के लिए किसी माध्यम की आवश्यकता ही अनुभव नहीं हुई। उसने कोई नया माध्यम खोजा ही नहीं। ईश्वर और हमारे बीच माध्यम की जरूरत ही क्या है?

मीरां करताल बजाकर नाच रही है और मीरां के साथ कृष्ण भी बांसुरी में स्वर भर उसके साथ नाच रहे हैं। मीरां कृष्ण का सह नृत्य मीरां के काव्य में परिलक्षित होता है। इस अलौकिक तन्मयता के दर्शन मुझे मीरां के सिवाय किसी अन्य के काव्य में नहीं होता है इसलिए मेरी दृष्टि में मीरां की साधना अद्वितीय है।

मीरां ने समूचे मध्ययुग को चुनौती दी है लेकिन उसने किसी नये धर्म, नये पंथ का कोई निर्माण नहीं किया। मीरां के कर्मक्षेत्र में मुझे कोई मीरां-पंथ नहीं मिला। जो व्यक्ति पत्थरों में से रास्ता बना रहा हो, कांटों पर चल रहा हो, अहर्निश जिसका जीवन संघर्षरत हो, जिसको प्रेम की तन्मयता के अलावा अन्य कोई भाव ही नहीं हो, वह क्या पंथ बनायेगा? क्यों पंथ-संप्रदाय बनायेगा? उसका तो प्रत्येक पद चुनौती है।

आजकल खोज, रिसर्च, अनुसंधान की बड़ी हवा है। अधिकांश रिसर्च स्कालर दस-बीस किताबें सामने रख लेते हैं और इसमें से कुछ अंशों का संग्रह कर अपनी थीसिस बना लेते हैं। फिर दौड़ लगाकर, दंडवत प्रणाम कर, उपहार-प्रसाद बांटकर डॉक्टरेट प्राप्त कर लेते हैं। वास्तविक शोध, अनुसंधान, रिसर्च का हमारे देश में अभाव ही है। यदि मेरी इस उम्र में दस वर्ष घट सकते तो मैं इस मेवाड़ में रहती। चित्तौड़ में रहती।

उन सभी स्थानों पर ठहरती, जिनका मीरां के जीवन का संबंध रहा है और तब उस भूमि तथा वहां के निवासी स्त्री-पुरुष-बच्चे, पेड़-पौधे, जमीन के साथ भेंट-मुलाकात, अध्ययन-अनुसंधान कर यह पता लगाती कि मीरां सधवा थी अथवा विधवा? मीरां को समझने के लिए तथा मीरां के सम्बन्ध में तथ्य संग्रह के लिए जब तक कोई जीवन खपा नहीं दे, तब तक मीरां को पाया जाना कठिन है। आप लोगों में से किसी को यह महत् कार्य करना चाहिये।

समूचे भक्ति आंदोलन में मीरां ही एक ऐसी स्त्री है जिसने भक्ति की मर्यादा दी है और चुनौती भी दी है। राजस्थान की भूमि के कणों से मीरां का शरीर बना है किंतु यहां उसकी कोई यादगार, स्मृति चिन्ह ही नहीं है। यह बड़े आश्चर्य का विषय है। यदि एकबार आप यह कह दें कि मीरां मेवाड़ तथा राजस्थान की नहीं है तो एकदम आपके देखते-देखते गुजरात या ब्रज अथवा बंगाल मीरां का कर्मस्थल बना डालेंगे। मीरां सचमुच संपूर्ण देश की पवित्र धरोहर है। देश की संपदा है। भारत की गौरवान्वित महिला भक्त है।

मीरां की प्रेम साधना को न तो जौहर के बलिदान के साथ रखा जा सकता है और न उसका स्थान तलवार उठाने वाली वीरांगनों के साथ निश्चित किया जा सकता है। उसको न ज्ञानियों के साथ रखा जा सकता है और न योगियों के साथ। वह तो अनूठी है, एकाकी है, अद्वितीय है। मीरां में जौहर है, संघर्ष है, ज्ञान है, विज्ञान है, योग है, साधना है। सभी सद्गुणों का मीरां में समावेश है। सबके लिए मीरां के साहित्य में स्थान है। कोई सद्भाव मीरां से अलग नहीं है। मीरां के पद कहीं भी गाये जायें। किसी भी समय सुबह, दोपहर, शाम, रात को गाये जायें। कोई भी गावें- स्त्री, पुरुष, बालक, वृद्ध सर्वत्र इनमें भावना की प्रतिष्ठा है। ब्रह्लीन की सार्थकता और पवित्रता है।

मैं बंगाल गई थी। वहां मैंने बाऊलों के गीत सुने। उनमें भी मीरां के गीतों की प्रतिध्वनि सुनी है। मैंने उनको मीरां के कुछ पद सुनाये तो बाऊल नाचने लगे। मीरां को मध्ययुग में पाषाणी सामंतशाही प्राचीरों में काराग्रस्त रखने का प्रयत्न किया गया किंतु महान ओजस्वी इस प्रेम दीवानी मीरां के स्वर लगभग साढ़े चार सौ वर्षों के बाद भी किले की दीवारों को फोड़कर समूचे देश के भक्तों के कंठों और हृदयों में प्रतिध्वनित हो रहे हैं। यह कोई छोटा जादू नहीं है। वह कौनसी शक्ति है, जो सारे देश में इतने वर्ष गुजर जाने के बावजूद भी आज व्याप्त है।

मीरां के कतिपय मार्मिक पदों को न हम विशुद्ध ज्ञानियों के साथ रख सकते हैं न उनको निर्गुण वादियों के साथ ही रखा जा सकता है और न सगुण साकार, ईश्वर, अवतारवाद आदि मानने वाले उपासकों के साथ रखा जा सकता है। उनमें एक तन्मयमयी एकात्म भावना है, जो केवल अकेली राधा में पाई जाती है। मैं कहती हूं मीरां ही राधा है, यानी वह ऐसी राधा है जो कृष्ण से एक भी है और भिन्न भी है। मीरां और कृष्ण के बीच कोई माध्यम नहीं है। वह तो स्वयं राधा है और वह स्वयं प्रेम निवेदन करती है। कर्मठ खोजकर्त्ताओं को मीरां के विस्तृत साहित्य में से ऐसे विशुद्ध पदों का संकलन करना चाहिये जो क्षेपक दोष से मुक्त हों। मीरां के पदों में यत्रतत्र बहुत कुछ मिलावट हो गई है। आपको खोज कर इस मिलावट को कम करना है। मीरां के जीवन संबंधी ऐतिहासिक तथ्यों को प्रामाणिक प्रकार से जमाना है। मीरां के साहित्य का यथार्थ मूल्यांकन प्रस्तुत करना है। इस प्रकार पर्याप्त शोध-खोज का काम करना है।

मैं एकबार चित्तौड़ को भी देख लेना चाहती हूं। मैं चित्तौड़ के उन पत्थरों से कहती हूं कि उन्होंने मीरां जैसी कोमल फूल सी पवित्र नारी को पाषाणी प्राचीरों में बांध रखा था किंतु उसने दुर्ग नदी काल प्रदेश स्थान को पार कर भारत के जन-जन के हृदय में निवास कर लिया अत: वह धन्य है। उसकी यह धरती धन्य है।

कहना नहीं होगा, महादेवीजी के इन व्याख्यानों से ही मुझे यह अन्त:प्रेरणा मिली कि आगे जाकर मैंने लोकदेवता कल्लाजी राठौड़ के सेवक सरजुदासजी वैष्णव के साथ मीरांबाई के जीवन-चरित्र को लोकजगत में परखने के लिए छह प्रांतों की विशद खोज-यात्राएं कीं और 'निर्भय मीरां' पुस्तक लिखीं। इसका प्रकाशन 1984 में हुआ। एक पुस्तक मैंने कल्लाजी पर भी लिखी जो 'लोकदेवता कल्लाजी राठौड़' नाम से राजस्थानी ग्रंथागार जोधपुर से प्रकाशित हुई।

रेत के कणों में राजस्थानी शब्दों की टकसाल तलाशते सीताराम लालस

'क्या भूलूं क्या याद करूं' की तर्ज पर हम विभिन्न क्षेत्रों में अपनी पहचान बनाने वाले पुरोधाओं को याद करने की बजाय भूलते जा रहे हैं। डिंगल के प्रख्यात कविराव मोहनसिंह, राजस्थानी भाषा साहित्य और इतिहास के मनीषी डॉ. मोतीलाल मेनारिया, लोककला-संस्कृति के उन्नायक देवीलाल सामर जैसे कई पुरोधाओं का जन्म शताब्दी वर्ष निकल गया और हमें पता ही नहीं चला।

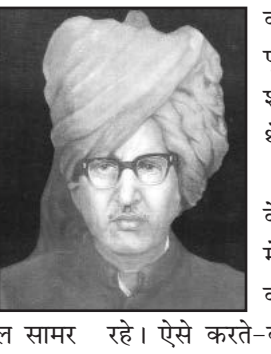

ऐसे ही डिंगल के कोशकार सीतारामजी लालस की अचानक पुराने पानड़ों की खोज में मुझे याद आ गई। उनकी मृत्यु के पश्चात मैंने दैनिक हिन्दुस्तान के 18 मई 1987 के अंक में लिखा था- 'विश्व के विशालतम शब्दकोश के रचनाकार श्री सीतारामजी लालस नहीं रहे। राजस्थान का यह सौभाग्य था कि सीतारामजी ने यहीं जन्म लिया और देखते ही देखते विश्व के सबसे बड़े कोश- राजस्थानी शब्दकोश का निर्माण कर एक बहुत बड़ी चुनौती का मुकाबला किया। लालसजी एक साधारण घर के अति साधारण इंसान थे- सामान्य शिक्षक, केवल सातवीं पास किन्तु एक अत्यन्त लगनशील व्यक्ति थे, शब्द शिल्पी थे।

एक विनम्र अध्यापक के नाते उन्होंने राजस्थानी के शब्द-सामर्थ्य को बड़ी बारीकी से पहचाना। शब्दों की ध्वनि का उन्हें पूर्ण ज्ञान था। शब्द-शक्ति के वे कायल थे।

सीतारामजी रेत के प्रत्येक कण तक में राजस्थानी शब्दों की टकसाल तलाशते रहे। ऐसे करते-करते आजीवन तीन लाख से अधिक शब्द एकत्रित किये तो लगा कि कोशकार लालसजी राजस्थानी शब्दायनों की पूरी शताब्दी ही जी गये। यह भी विचित्र संयोग ही रहा कि जिस दिन वह जिए उसी दिन गए। अपनी जन्म तिथि और पुण्य तिथि को उन्होंने जरा भी दो नहीं होने दिया। 29 दिसम्बर 1908 को जोधपुर के पास नरेवा गांव के चारण परिवार में उनका जन्म हुआ और इसी तिथि को 1986 में उन्होंने अपनी देह त्याग दी।

सीतारामजी को उनकी शब्द-साधना के फलस्वरूप भारत सरकार ने 'पद्मश्री' अलंकार से सम्मानित किया। राजस्थान साहित्य अकादमी ने भी अपना सर्वोच्च सम्मान 'मनीषी' उन्हें प्रदान किया। जोधपुर विश्वविद्यालय ने 'डाक्टर ऑफ लिटरेचर' की मानद उपाधि प्रदान कर उनकी सेवा-साधना और समर्पण-भावना का सम्मान किया।'

याद पड़ रहा है, उदयपुर के राजस्थान साहित्य अकादमी के एक समारोह में, एक धर्मशाला में मेरी उनसे भेंट हुई थी। अगरचंदजी नाहटा, मनोहरजी शर्मा, रावतजी सारस्वत, चंद्रदानजी चारण आदि से तो मेरा परिचय था पर लालसजी को पहली बार देखा था। वे बड़े खुश हुए। बड़ी आत्मीयता से उन्होंने अपने पास खटिया पर बिठाया। लोकसाहित्य के क्षेत्र में मेरे द्वारा किये जा रहे कार्यों की बड़ी देर तक प्रशंसा करते रहे। मैं आयु में उनसे बहुत छोटा था लेकिन मन ही मन उनके बड़प्पन की बड़ी आंखों को नमन करता रहा।

अपनी आदत के मुताबिक मैंने उनके द्वारा राजस्थानी सबद कोश के बारे में सवाल दागे और कहा कि वह डिंगल सबद कोश ही अधिक हो गया है। उन्होंने बड़ी विनम्रता से कहा - 'मैं डिंगल की विरासत का ही धनी हूं। इसीलिए इसमें आपका लोकसाहित्य नहीं आ पाया है। यह काम भानावतजी आपको करना है मगर अकेले एक व्यक्ति के वश का नहीं है। पूरा जीवन खपाने पर भी लगता है, काम अधूरा रह गया है। लोकसाहित्य सबद कोश का काम आपके जिम्मे है। मैं इस क्षेत्र का नहीं हूं। मेरा आशीर्वाद आपके साथ है।'

आज जब लालसजी को याद करता हूं तो उनकी विद्वता, विनम्रता और सदाशयता से विलूम जाता हूं।

अटलजी एवं क्रिसमस पर सूक्ष्म पुस्तिकाएं

उदयपुर। कलाकार चन्द्रप्रकाश चित्तौड़ा ने पूर्व प्रधानमंत्री अटलबिहारी वाजपेयी की 94वीं जन्म जयन्ती पर बीस पृष्ठीय दो इंच की सूक्ष्म पुस्तिका तैयार की है। इसी प्रकार क्रिसमस पर 1700 चावलों द्वारा आकर्षक क्रिसमस ट्री की झांकी बनाई है जिसमें सांता क्लोज, जींगल बेल, स्टार, बच्चा एवं उपहार उकेरे हैं।

हमारे पास शब्द रंजन है आपके पास और भी बहुत कुछ कृपया सहयोग करें

संरक्षक	11000/
विशिष्ट सदस्य	5000/
आजीवन सदस्य	3000/
शब्दरंजन के सहयात्री	1000/
साहित्यिक चौपाल	500/
वार्षिक संस्थागत	300/
वार्षिक व्यक्तिगत	250/

शब्दरंजन में विज्ञापन सहयोग कर अपने इस पत्र को और अधिक रंगदार, रूपवान तथा समाज विकास का अग्रणी प्रतिनिधि पत्र बनायें।

(**Shabd Ranjan**, UCO BANK, Bhupalpura Branch, Udaipur, a/c no. 18450210000908, IFSC no. UCBA0001845, a/c type- Current a/c)

कृपया रचनाएं व समाचार ई-मेल से भेजें तो सुविधाजनक शीघ्र प्राप्त होंगी।

shabdranjanudr@gmail.com

कलक्टर आनंदी ने पदभार सम्भाला

उदयपुर। उदयपुर जिले की नई जिला कलक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट श्रीमती आनंदी ने 27 दिसंबर को पदभार सम्भाल लिया। तमिलनाडु निवासी आनंदी भारतीय प्रशासनिक सेवा के 2007 बैच की अधिकारी हैं और विभिन्न प्रशासनिक पदों पर अपनी सेवाएं दे चुकी है। इससे पूर्व वे बूंदी, सवाईमाधोपुर एवं राजसमंद जिले की कलक्टर भी रह चुकी हैं।

पदभार ग्रहण करने के पश्चात जिला कलक्टर ने कहा कि सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ आमजन तक पहुंचाना पहली प्राथमिकता रहेगी। उन्होंने कहा कि विश्व प्रसिद्ध उदयपुर शहर की विश्व पटल पर अपनी विशिष्ट पहचान है। इस पहचान को बरकरार रखते हुए इसे और अधिक ऊंचे आयाम तक पहुंचाने के प्रभावी प्रयास किए जाएंगे। साथ ही शहर के सौंदर्यीकरण को लेकर चल रहे कार्यों को गति प्रदान करते हुए इन्हें शीघ्र पूरा किया जाएगा।

गिट्स के धैर्य जोशी का गणतंत्र दिवस परेड में चयन

उदयपुर। गीतांजली इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्निकल स्टडीज (गिट्स) डबोक, उदयपुर के इलेक्ट्रीकल इंजीनियरिंग विभाग के कैडेट अन्डर ऑफिसर धैर्य जोशी का एनसीसी ऐयरविंग द्वारा गणतंत्र दिवस पर दिल्ली में परेड के लिए चयन हुआ है। गिट्स के डायरेक्टर डॉ. विकास मिश्र ने बताया कि धैर्य जोशी पूरे देश में 17 एनसीसी निदेशालयों से आये बेस्ट कैडेट्स परेड का प्रतिनिधित्व करेगा। उल्लेखनीय है कि धैर्य ऑल इण्डिया लेवल पर वायुसेना द्वारा आयोजित नेशनल कैम्प का प्रतिनिधित्व कर चुका है। एनसीसी इंचार्ज मनोज सिंह एवं वित नियंत्रक बी. एल. जागिंड़ ने धैर्य को बधाई दी।

सदा प्रज्वलित रखें समाज सेवा का दीप : राज्यपाल

- कन्हैयालाल सेठिया सम्मान मेरे लेखन का अकल्पनीय योग : डॉ. भानावत

सम्मान की परंपरा अक्षुण्ण रखना गौरवानुभूति : कांकरिया

उदयपुर। समाज सेवा का दीप सदा प्रज्वलित रहना चाहिये। समाज में ऐसी अनेक प्रतिभाएं छिपी हैं जो अपने-अपने क्षेत्र में सर्वोत्कृष्ट कार्य कर रही हैं। निष्ठा तथा समर्पण से अपने कार्यक्षेत्र में विशिष्टता हासिल करने वाले जब समाज में सम्मानित होते हैं तब उनका संदेश बहुआयामी होता है।

ये विचार पश्चिम बंगाल के राज्यपाल केसरीनाथ त्रिपाठी ने व्यक्त किये। अवसर था 16 दिसम्बर 2018 को कोलकाता में आयोजित विचार मंच द्वारा सम्मान समारोह का।

मुख्य अतिथि के रूप में राज्यपाल ने कहा कि एक तरफ वृहत्तर समाज में कृतज्ञता का भाव जागृत होता है तो दूसरी तरफ युवा पीढ़ी को इससे प्रेरणा भी प्राप्त होती है। इसका तीसरा प्रभाव उन लोगों पर पड़ता है जो नई ऊर्जा के साथ अपने कार्य में पूर्णता के साथ प्रवृत्त होते हैं। उन्होंने अपना उद्‌बोधन अपने स्वरचित गीत 'जलते रहो ए दीप तुम जलते रहो' से समाप्त किया।

पिटोरिया स्ट्रीट स्थित ज्ञानमंच सभागार में आयोजित इस भव्य सम्मान समारोह की अध्यक्षता प्रख्यात समाजसेवी व उद्योगपति पदनमचंद भूतोड़िया ने की। उन्होंने कहा कि ऐसे सम्मान राष्ट्र की रीढ़ बन दीपशिखा की तरह ज्योतिर्मान होते हैं। समारोह में डॉ. महेन्द्र भानावत को राज्यपाल द्वारा प्रशस्ति पदक तथा सेठियाजी के सुपुत्र डॉ. जयप्रकाश द्वारा 51 हजार का चेक प्रदान कर सम्मानित किया गया।

डॉ. महेन्द्र भानावत ने कहा कि कन्हैयालाल सेठियाजी का सान्निध्य उनके लिए स्वर्णिम यादगार लिये है। पहली बार सन् 1981 में चुरू में लोकसंस्कृति शोध संस्थान ने सेठियाजी को डॉ. एल. पी. टेस्सिटोरी और मुझे झवेरचन्द मेघाणी स्वर्ण पदक दिया गया।

दूसरी बार 1984 में उदयपुर के महाराणा मेवाड़ फाउण्डेशन के समारोह में उन्हें महाराणा कुंभा तथा मुझे महाराणा सज्जनसिंह पुरस्कार से नवाजा गया। इस बार मैं उन्हें हल्दीघाटी ले गया। वहां रक्ततलाई की माटी से उन्होंने सबसे पहले मेरे तिलक किया और मुझे लोकसाहित्य का मोटा भेदू कह फिर अपने भाल को ललित लावण्य दिया। डॉ. भानावत ने कहा कि लोककला हमारी विरासत है और हम सबको मिलकर इसके संरक्षण, संवर्द्धन के साझे प्रयास करने होंगे।

विचार मंच के मंत्री सरदारमल कांकरिया ने कहा कि हमें सम्मान की इस परम्परा को अक्षुण्ण रखना है क्योंकि यहां से मिली ऊर्जा हम सबको जीवन में आगे बढ़ते रहने की प्रेरणा देती है। अध्यक्ष पन्नालाल कोचर, मंत्री सरदारमल कांकरिया ने पुरस्कारों के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला। संयोजन तारा दुगड़ ने किया।

समारोह में डॉ. भानावत के अलावा कर्मयोगी सम्मान सत्यनारायण खेतान को, फूसराज बच्छावत सम्मान स्वास्थ्य जागृति संस्थान को, कान कंवरी पारख ग्राम्य सेवा संस्थान सम्मान शंकरलाल अग्रवाल को, ब्राह्मी कला सम्मान राजीव सूर राय को, अनुपमा सम्मान प्रत्युषा राय, कलामंडलम् निम्मी व संग्राम राय को तथा रविन्द्र जैन संगीत साधना सम्मान मोहनलाल बरड़िया के पुत्र को प्रदान किया गया। **-डॉ. तुक्तक भानावत**

जब कलामंडल में महादेवीजी ने 'म्हाने चाकर राखोजी' नृत्यनाटिका देखी

प्रख्यात कवयित्री महादेवी वर्मा आधुनिक काव्यधारा की बेमिसाल मीरां कही गई है। 'मिलन का मत नाम लो रे, मैं विरह में चीर हूं' तथा 'मैं नीर भरी दुख की बदली' जैसी गीत-रचनाएं उनके विरही जीवन को मीरांमय बना देती हैं। मीरां भी जीवनभर 'दरद दीवानी' रही। चित्तौड़गढ़ से निष्कासित होकर पूरे 42 वर्ष उसका भ्रमण किंवा भटकन काल रहा और अन्ततः 82 वर्ष की उम्र में द्वारिका के समुद्र में अलोप हो गई।

सन् 1975 में जब पूरा देश अन्तर्राष्ट्रीय महिला वर्ष मना रहा था तब उदयपुर की महिला मंडल ने महादेवी वर्मा को आमंत्रित किया। बड़े उत्साह और गरिमामय शालीनता के साथ महिला मंडल के संस्थापक दयाशंकर श्रोत्रिय ने त्रिदिवसीय 20 से 22 अक्टूबर को समारोह मनाया। भारत के उपराष्ट्रपति बी. डी. जत्ती ने समारोह का उद्‌घाटन किया और मुख्यमंत्री हरिदेव जोशी मुख्य अतिथि बने।

महादेवीजी ने अपनी उपस्थिति से इस आयोजन को इतिहास का शिलालेखीय अक्षर दे दिया। तीनों दिन महादेवी ने मीरां का युग, मीरां की साधना और मीरां के गीत विषय पर जो व्याख्यान दिया उसमें मीरां के अनेक उन पक्षों को जीवंत ज्योतित किया जो तब तक अनकहे रहे। मैं भी इसका प्रत्यक्ष श्रोता बना।

मीरां संबंधी व्याख्यानों की चर्चा मैंने भारतीय लोककला मंडल आकर देवीलाल सामरजी से की तो

राणा विक्रमादित्य एवं मीरां की भूमिका में देवीलाल सामर तथा शकुन्तला पंवार

यह उचित समझा कि महादेवीजी को कलामंडल आमंत्रित कर उन्हें हमारे द्वारा रचित मीरांबाई से संबंधित 'म्हाने चाकर राखोजी' नामक नृत्य नाटिका दिखाई जाये। मैंने श्रोत्रियजी से निवेदन किया। महादेवीजी ने हमारा निमंत्रण स्वीकार कर लिया। समस्या आड़े आई कि उसी दिन महादेवीजी को प्रस्थान करना है अतः समय का तालमेल नहीं बैठेगा। फलस्वरूप तै रहा कि नाटिका देखने के पश्चात महादेवीजी को कार से चित्तौड़ पहुंचाकर रेल में बिठाया जायेगा। यही हुआ।

कलामंडल के मुक्ताकाशी मंच पर शहर के सभी प्रतिष्ठित जनों को हमने आमंत्रित किया था। संचालक देवीलाल सामरजी ने समारोह के अध्यक्ष के रूप में महादेवी का बड़ा ही गौरवपूर्ण कलापरक सम्मान कर नाटिका मंचित की। पूरे एक घंटे तक महादेवीजी बड़े भावपूर्ण मनोयोग से नाटिका निहारती रहीं। सारी दर्शक दीर्घा भी भीगे मन लिये थी। महादेवीजी कुछ नहीं कह सकीं और सीधे मंच पर पहुंची। एक-एक कलाकार को शाबाशी दी और मीरां बनी अभिनेत्री शकुन्तला पंवार को अपने हिरदे से लगा लिया। बोलीं - 'तुम तो मीरां को अपने में बिठाकर स्वयं मीरांमय बन गई लेकिन मुझे भी तुमने मीरां से साक्षात्कार करा दिया। उदयपुर मेरा आना सार्थक हो गया। यह कृति देख मैंने भी अपने को धन्य कर लिया।' **- म. भा.**

'आर्ची गैलेक्सी' फ्लैट की लॉटरी खुली

उदयपुर। मुख्यमंत्री जन आवास योजना के तहत देबारी पावर हाउस के सामने स्थित आर्ची गैलेक्सी के एलआईजी व ईडब्ल्यूएस श्रेणी के आवेदकों के फ्लैट की लॉटरी गुरूवार सुबह निर्माण स्थल पर खोली गई। डायरेक्टर आर्ची गलेक्सी

ऋषभकुमार भानावत एवं संजय बांठिया ने बताया कि दोनों श्रेणी के सभी आवेदकों तथा यूआईटी प्रतिनिधि व अधीक्षण अभियंता नगर विकास प्रन्यास अनीश माथुर, असिस्टेंट टाउन प्लानर ललित पूर्बिया, सहायक कर्मचारी किशनलाल सांवरिया, मोहित सुखवाल आदि की मौजूदगी में लॉटरी खोल कर बारी-बारी से नामों की घोषणा की गई। उन्होंने बताया कि एलआईजी में 119 आवदेकों व ईडब्ल्यूएस के 61 आवेदकों के नाम लॉटरी खुली। जिनके नाम लॉटरी खुली है, उन्हें शीघ्र ही आवंटन पत्र प्रदान किए जाएंगे। जिनके नाम पर ड्रा खुला है उनकी सूची आर्ची अरिहंत शोभागपुरा तथा देबारी स्थित निर्माण स्थल पर भी उपलब्ध है।

डायरेक्टर आर्ची गलेक्सी ऋषभकुमार भानावत एवं संजय बांठिया ने बताया कि सभी फ्लैट के निर्माण की आधुनिक तकनीकों के साथ ही गुणवत्ता के उच्चतम मापदंडों का ध्यान रखा गया है। टाउनशिप से एयरपोर्ट मात्र 10 किलोमीटर, 10 मिनट के रास्ते पर है। इस टाउनशिप की सबसे खास बात यह है कि 75 प्रतिशत क्षेत्र खुला रखा गया है। इसमें कुल दस-दस मंजिलों वाले छह टावर बन रहे हैं।

खरीदारों को 6 लाख रुपए के लोन पर 6.5 प्रतिशत सब्सिडी लोन खाते में एनपीवी ऋण संस्थान के माध्यम से सीधे ही जमा की जाएगी जो करीब 2.67 लाख की बनती है। राज्य सरकार की ओर से पंजीयन शुल्क में भी भारी छूट दी गई है। वर्तमान में 7 प्रतिशत की बजाय ईडब्ल्यूएस पर केवल 1 प्रतिशत, एलआईजी श्रेणी में 2 प्रतिशत ही पंजीयन शुल्क लगेगा। यही नहीं, अभी सरकार इस प्रकार के निर्माण पर 12 प्रतिशत की जीएसटी ले रही है मगर इसमें 4 प्रतिशत की छूट देकर केवल 8 प्रतिशत ही जीएसटी ही देना होगा। भारत सरकार एवं राजस्थान सरकार के दिशा निर्देशानुसार आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग और अल्प आय वर्ग के आवेदकों को बैंक से 6 लाख तक के ऋण पर 6.5 प्रतिशत की छूट दी जाएगी। यह छूट 2.67 लाख बनती है। इसमें ब्याज पर सब्सिडी भी दी जाएगी। बैंक की शर्तों अनुसार ऋण अधिकतम 80 प्रतिशत तक ऋण देने का प्रावधान किया गया है।

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।